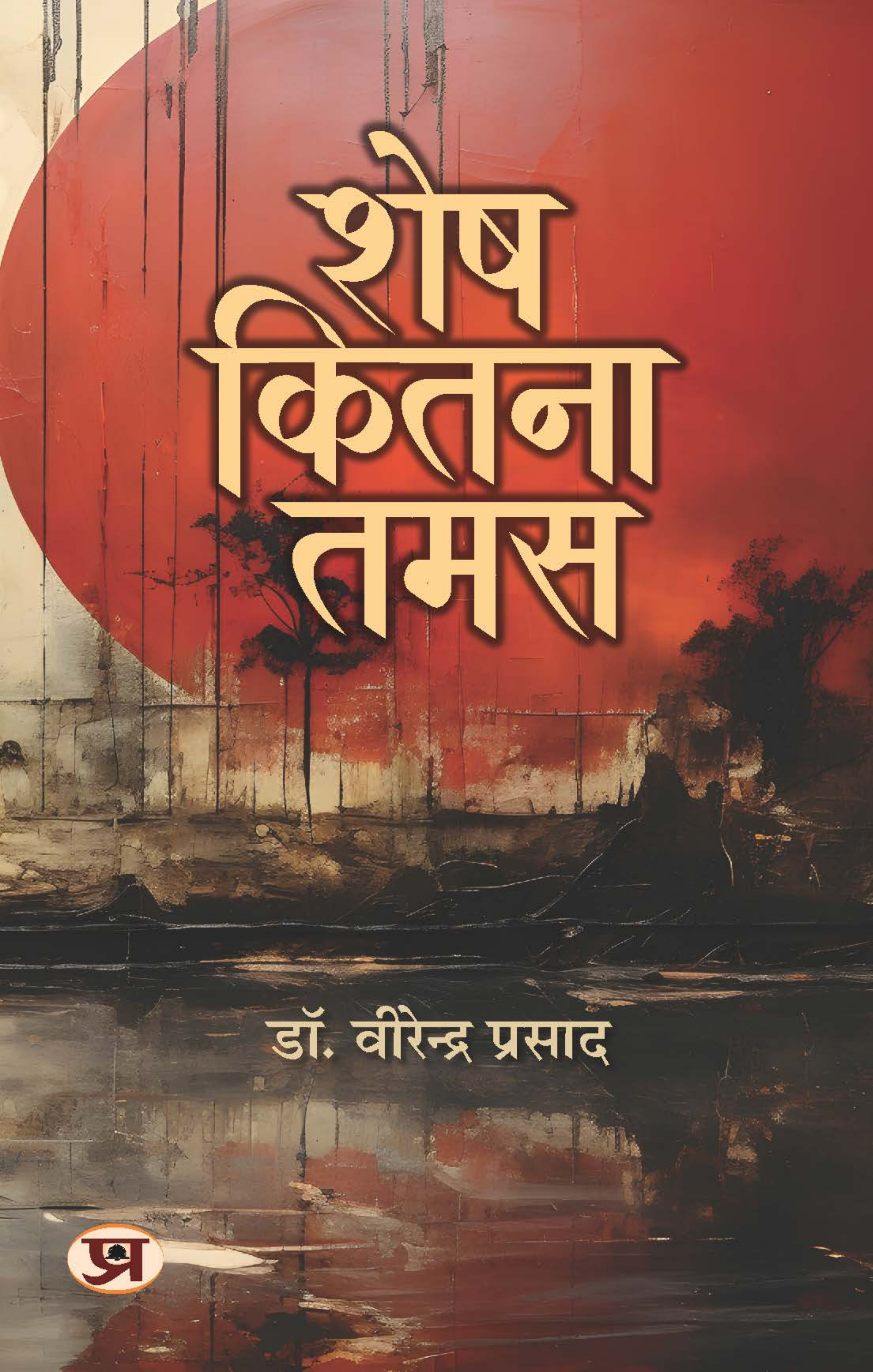

शेष
कितना
तमस
डॉ. वीरेन्द्र प्रसाद

शेष कितना तमस

डॉ. वीरेन्द्र प्रसाद

प्रभात प्रकाशन

मेरी प्रेरणा, प्रेमपथ की सहचर,
सुख-दुःख में सहगामिनी जीवनसंगिनी को
सप्रेम समर्पित।

"तुम जीने का साधन
आत्मा का साध्य हो,
गहन तिमिर में अपरिमित
दीप मधुपथ माध्य हो।"

भूमिका

इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं कि वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में मोबाइल फोन एवं मशीनी तंत्र मानव तंत्र पर हावी होकर मानवीय मूल्यों, विचारों और भावनाओं के क्षरण हेतु मुख्य कारक की भूमिका में है। साहित्य मानवीय मूल्यों और विचारों को अक्षुण्ण बनाए रखने में महती भूमिका निभाता रहा है। आरंभ से ही काव्य प्रवाह ने दिल और दुनिया को जोड़ने का काम किया है। जुड़ने और जोड़ने के सारस्वत अनुष्ठान की इसी कड़ी में काव्य-संग्रह 'शेष कितना तमस' को आप विद्वज्जनों तक उपलब्ध कराने का गिलहरी प्रयास कर रहा हूँ। संग्रह की कविताएँ कपोल कल्पना मात्र नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जन सामान्य के जीवन से जुड़ी परिस्थितियों का ताना-बाना है। शब्दों के संयोजन से कलमबद्ध शब्दों, छंदों एवं पंक्तियों का सरोकार मानवीय चेतनाओं, विचारों और संवेदनाओं से है, अर्थ से है, यथार्थ से है, स्व से है, परमार्थ से है, वास्तविकता से है और सकारात्मक जीवन-मूल्यों से भी।

मैं स्वांतः सुखाय की मंगल भावना पर विश्वास करता हूँ और उसके लिए आवश्यक आत्मनिरीक्षण एवं आत्मपरीक्षण पर भी। प्रकृति का सौम्य रूप मेरे हृदय में चंचल लय-सी भर देता है और उसका रौद्र रूप मन को चिर स्थिरता प्रदान करता है। प्रकृति की रौद्रता का परिणाम ही मन की एकाग्रता है और गतिमान बने रहने का कारक भी। प्रकृति के भाव, विचार और कर्म की सौंदर्यता समान रूप से सभी मुझे आकर्षित करती हैं। भाव-विचार की अनंत सीमाएँ मुझे अंनत

कर्मपथ पर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करती हैं। स्वतंत्र भाव अंकन एवं निर्बाध कर्मपथ पर गतिमान रहने के कारण मुझे जीवन के अधिकांश भाव एवं सामाजिक कर्म को समझने एवं सीखने का मौका मिला है। असफलताएँ आत्मनिरीक्षण एवं आत्मपरीक्षण का साधन बनीं और यही फिर सफलताओं का आधार भी।

सत्य काव्य का साध्य और प्राकृतिक सौंदर्य साधन है। सत्य एकता में असीम है और प्राकृतिक सौंदर्य विभिन्नताओं में अनंत। उन असीम अनंत भावों को गढ़ना कभी बहुत सरल और कभी कठिन हो जाता है। व्यक्ति की सीमा में सत्य की दोहरी स्थिति सहज ही नहीं, स्वभाविक भी है। सत्य की व्यापकता हमारी सीमा में बँधकर व्यष्टिगत हो जाता है और हमारी सीमा के साथ सापेक्ष पर अपनी व्यापकता में निरपेक्ष बना रहता है। मानव का चिर अतृप्त जिज्ञासा भ्रमित करने में कोई कसर नहीं छोड़ती है। अलग-अलग व्यक्ति के दृष्टिकोण भिन्न हो सकते हैं और यह संभव है कि विवाद की कभी न टूटने वाली शृंखला का जन्म हो जाए, जो निरंतर बढ़ती ही रहे। इस उलझन को सुलझाने का नाम जीवन है।

इस पुस्तक में संगृहीत कविताओं में जीवन को समझने की एक कोशिश है। कहीं-न-कहीं कोई जाना-पहचाना चेहरा, कोई वास्तविक घटना, परंपरा से अर्जित संस्कार, अनुभवजन्य सत्य आदि ही कविता की कच्ची सामग्री है। मेरी कविताएँ आत्माभिव्यक्ति के लिए लिखी गई हैं, परंतु सचेत रूप से लक्षित होकर नहीं। यह सत्य है कि काव्य कला साझे जीवन की उपज होती है, जिसे हम सभी साथ मिलकर जीते हैं एवं अदृश्य तंतुओं से बँधे होते हैं। अनास्था आधुनिक है, आस्था असंगत है, मृत्युबोध आधुनिक है, जीवनबोध असंगत और निरर्थक है। इस प्रकार के तर्क के आधार पर साहित्य एवं जीवन को परखना एवं दोष-गुण निकालना एक दिग्भ्रमित सोच है, जैसे टेढ़े-मेढ़े काँच के सामने देखना।

मानव बहुत लंबी यात्रा कर यहाँ तक पहुँचा है। इनसान कई बार टूटा, हारा, लड़ा, फिर उठ खड़ा हुआ एवं तमाम कठिनाइयों का सामना करता हुआ यहाँ तक पहुँचा है। उसकी जिजीविषा और उपलब्धि अनवरत संघर्ष की उपज है। यह संघर्ष व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों है। सदियों के संघर्ष ने मानव को जीवन में आस्था रखना सिखलाया है। आस्था और विश्वास के बल पर वह आगे बढ़ता गया है। परस्पर विरोधी एवं नकारात्मक वृत्तियों के रहते हुए भी मानव जीना चाहता है। अपने जीवन को बेहतर और बेहतर बनाना चाहता है। जीवन–संघर्ष की अनुभूतियाँ मानव को संवेदनशील बनाती हैं और सौंदर्यबोध का अहसास कराती हैं। ऐसे चिर अनंत जीवन को पूर्णरूपेण समझना किसी एक के वश की बात नहीं हो सकती है। मैंने अपनी समझ कविता के माध्यम से आप तक पहुँचाने की एक छोटी सी कोशिश की है। आशा है, मेरी कविताएँ सहृदय पाठक को जीवन के किसी आत्मीय क्षण से साक्षात्कार कराने में मददगार सिद्ध होंगी। गहरी रात की सघनता को पुस्तक की आत्मिक लौ से प्रकाशित करने की मेरी स्वाभाविक इच्छा चिरसतत रहेगी।

प्रस्तुत काव्य–संग्रह में कमियों और त्रुटियों का होना स्वाभाविक है। इसका निष्पक्ष मूल्यांकन पाठक ही कर पाएँगे। इसलिए आपकी निष्पक्ष प्रतिक्रिया, सुझावों और आलोचनाओं का हृदय से स्वागत है। आपका मूल्यवान मार्गदर्शन मुझे अगली कृति के लिए संबल एवं ऊर्जा प्रदान करेगा।

मोती की तरह बिखरी कविताओं को माला में पिरोकर पुस्तकाकार रूप देते हुए आप तक पहुँचाने वाले, प्रकाशन में सहयोग करने वाले मित्रों, वरिष्ठ जनों एवं अनुजों के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

—डॉ. वीरेन्द्र प्रसाद

अनुक्रम

तुम्हारे संग

तुम्हारे संग घूमना
हँसना, बोलना, मुझे अच्छा लगा।
हाथ पकड़ हम चले
राहों में कई लोग मिले
नजरें बचाकर सबसे
अपने में हम मगन रहे
चलते–चलते जो खाई ठोकर
झुककर, तेरा सँभलना, मुझे अच्छा लगा।



सरका तुम्हारा आँचल
रखी सँभाल तनु तन
नजरें झुका लीं तुमने
मदहोश कर गई चितवन
टेसू–सा दहक उठे कपोल
और तुम्हारा शरमाना, मुझे अच्छा लगा।

छाँव अशोक के बैठ गए
कुछ तुमने कहा, कुछ मैंने कहा
क्या–क्या बातें की हमने
अर्थ निकालना व्यर्थ रहा।
देर हुई अब घर जाना है
कहना, फिर चुप हो जाना, मुझे अच्छा लगा।

एक छोटी सी बात पर उलझ जाना
बच्चों की तरह चीखना–चिल्लाना
देखने लगे लोग हम दोनों को
चुप होकर हम दोनों का मुसकराना
हाथ पकड़ फिर चल दिए
राहों में हँसकर बतियाना, मुझे अच्छा लगा।

□

मृदु स्पर्श

आपकी हँसी, अच्छी लगती है
मैं खामोश, मंत्रमुग्ध देखता हूँ
देखने को नजारे हैं बहुत
निगाह के चमन देखता हूँ।
स्पर्श मिला जब आँखों का
विनिमय हुआ एहसासों का
आह्लादित करता है मुझको
एक पल मधुरिम साँसों का
शर्मसारी हथेली का जब स्पर्श

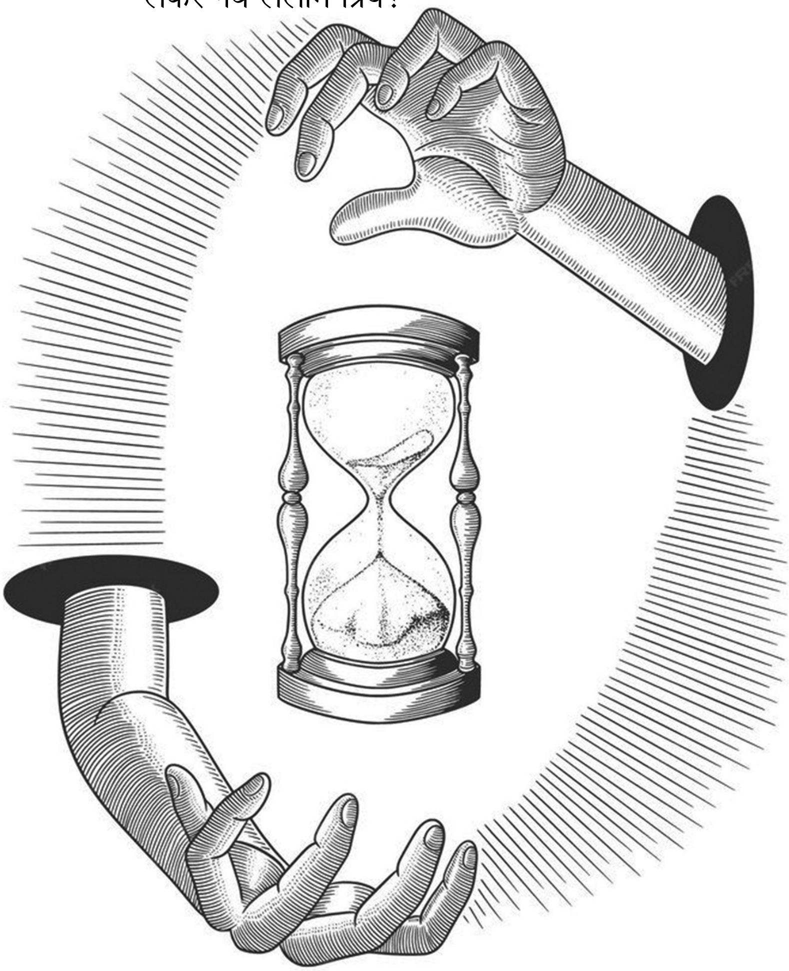


आप थे पसीने से तर–ब–तर
उर में एक तूफान–सा उठा
तन डूबा, मधुतिक्त लहर
वक्त ठहर गया कुछ पल
जैसे पर्वत से लड़ते बादल
जीवन की ऋतुएँ बदलीं
मरुस्थल में खिल उठा शतदल
फिर सिमट गए तुम ख्वाबों में
हर पल आते हो दिन–रैन
विकल मैं, सिर्फ इतना कहूँ
न बाँटिए मृदु स्पर्श नैन
क्योंकि, एक जिंदा स्पर्श
प्रतीक्षा का अंदाज बदल देता है
एहसास तो एहसास है
जिंदगी का अंदाज बदल देता है।

□

क्या दूँ नाम प्रिये

मेरे लिए तेरा निश्चल प्यार
क्या दूँ नाम प्रिये
सपनें में आती हो तुम
लेकर नव ललाम प्रिये!



बढ़ते गए कदम मेरे
चाहा जिस डगर न जाना
खींचकर लाते गए तुम
हमसफर, सफर न जाना
नेह की बरसात में, मैं नहाया
यह कैसा संग्राम प्रिये
मेरे लिए तेरा निश्चल प्यार
क्या दूँ नाम प्रिये!

क्या चाहा था और मुझे
अब क्या-क्या है मिला
साथ तुम्हारा है तो
मुझे किसी से क्या गिला
मृगतृष्णा नहीं, सार्थक है
जीवन है अभिराम प्रिये
मेरे लिए तेरा निश्चल प्यार
क्या दूँ नाम प्रिये!

साथ मेरा दोगे कब तक
कौन ज्योतिषी बता पाए
जान पाऊँगा तभी जब
वक्त मुझपर मुसकराए
और चाह पर मेरी भरोसा
कर फूँकोगे प्राण प्रिये
मेरे लिए तेरा निश्चल प्यार
क्या दूँ नाम प्रिये!

एक अंतर्द्वंद्व मेरे मन में
फिर भी है कुनमुनाता
क्या गलत है क्या सही,
काश पहले जान पाता
तुम मेरे हो, इसी सोच पर
अब लगा दो विराम प्रिये
मेरे लिए तेरा निश्चल प्यार
क्या दूँ नाम प्रिये!

□

शाश्वत इकरार

आँखों में बसाकर तुमको, मैं निर्मल इजहार करूँ
जी में आता है तुमको, मैं जी भर प्यार करूँ।
पास बिठाकर तुमको, मैं अपनी किस्मत बनाऊँ,
तेरी हर आहट से, अपने हर ख्वाब सजाऊँ
ख्वाब बनाकर तुमको मैं, फिर सच साकार करूँ
जी में आता है तुमको, मैं जी भर प्यार करूँ।



अब नहीं मैं माँगता, जमाने भर की खुशी
चाहता हूँ सिर्फ, तुम्हारे अधरों पर रहे हँसी
इस हँसी का सदा मैं, हर पल दीदार करूँ
जी में आता है तुमको, मैं जी भर प्यार करूँ।

डरते होंगे लोग तुम्हारी जफा की अदा से
घायल मैं, डरता हूँ, तेरी वफा की अदा से
चिर ढाई अक्षर में, शाश्वत इकरार करूँ
जी में आता है तुमको, मैं जी भर प्यार करूँ।

□

तेरा मेरा प्यार

एक मृदुल एहसास
साँस में मीठी चुभन
है यह आनंद अलौकिक
दिव्यता का एक उपवन
डूबने पर पार होने की कसक
पार होने पर डूबने की असक



सलिल अनल मिल प्रखरतर
नीरव रव, संग नित्य उपासक
कुछ भी नहीं तो यह है
एक गहन आत्मसमर्पण
विश्वास है अद्भुत
है आत्मा का दर्पण
इस रिश्ते को जो भी दे,
नाम यह संसार
ऐसा ही है कुछ–कुछ
तेरा–मेरा प्यार।

तुम्हारे साथ रहकर

तुम्हारे साथ रहकर
महसूस हुआ अकसर
छोटी है यह जिंदगी
छोटी हो गई रहगुजर।

सारी दिशाएँ, पास मेरे
मलयज खुशबू बिखेरे



सिमट गया संसार सारा
बनके आँगन सवेरे
एकांत नहीं मिलता
न बाहर, न भीतर
तुम्हारे साथ रहकर
महसूस हुआ अकसर।

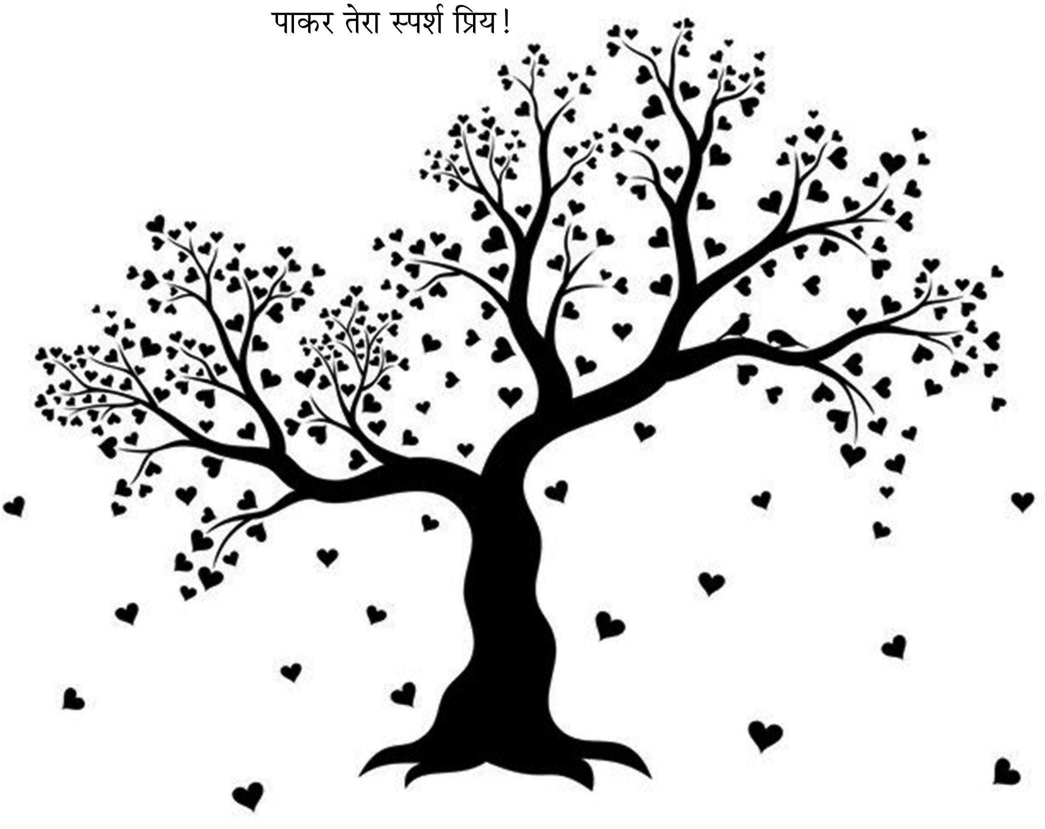
मतलब है हर बात का
खिड़की से आते वात का
धूप दीवारों पर चलता
तृण के अंबुजात का
टकराता मेघों से अब
प्रणय सोपान चढ़कर
तुम्हारे साथ रहकर
महसूस हुआ अकसर।

चीर सकता हूँ शिखर
सोख सकता हूँ सागर
तेरे संग, असीमित बल
उम्मीद से, जाता निखर
जीत लूँगा हर जहाँ को
हारकर तुमसे मगर
तुम्हारे साथ रहकर
महसूस हुआ अकसर
छोटी है यह जिंदगी
छोटी हो गई रहगुजर।

□

पुलकित हुआ मेरा हृदय

पुलकित हुआ मेरा हृदय
पाकर तेरा स्पर्श प्रिय!
खुल गए मेरे जीवन के बंधन
गीत बन गए मेरे उर के रोदन
अब प्रीत तुम्हारी मेरे प्राण के कण
सब सीमाएँ टूट गई मेरे प्रिय
पुलकित हुआ मेरा हृदय
पाकर तेरा स्पर्श प्रिय!



अब आए जीवन में सुख–दुःख
मैं हो रहा जीवन–मृत्यु से विमुख
अब रहो मेरे दृगों के सम्मुख
अमृत्व का हो जाए भ्रम, मिटे संशय
पुलकित हुआ मेरा हृदय
पाकर तेरा स्पर्श प्रिय!

तन में आए शैशव यौवन
मन में विरह मिलन के व्रण
या लहरों से रचित हो जीवन
मन में बसे नेह चिर तन्मय
पुलकित हुआ मेरा हृदय
पाकर तेरा स्पर्श प्रिय!

नित्य–अनित्य जगत् के क्रम
बदले, छुटे या हो जाए कम
प्रगति–ह्रास के रह जाएँ भ्रम
ज्वलंत रहे बस तुमसे परिणय
पुलकित हुआ मेरा हृदय
पाकर तेरा स्पर्श प्रिय!

तुम सुंदर से बन अति सुंदर
बसते रहो अंतर में अंतरतर
विजयी हो जाओ मुझ पर
वरदान बने मेरी यह पराजय
पुलकित हुआ मेरा हृदय
पाकर तेरा स्पर्श प्रिय!

□

तुम देते निमंत्रण मुझको मौन

जब गुजरता हूँ तुम्हारे बगल से
आने लगते हैं स्वप्न सलोन
सूरज की किरणों से तीव्रतम
तुम देते निमंत्रण मुझको मौन।



एहसास सुखद, खिल उठे नयन
खिल उठे नयन, बिंध गया मन
रुक जाऊँ एक पल तेरे बगल में
विस्मित खड़ा तकते तेरे नयन
दीर्घ समीर भरता निःश्वास
चंचल लहरों में तुम हो कौन
तुम देते निमंत्रण मुझको मौन।

मन करता वापस मुड़ जाऊँ
मुड़कर तुमको, आँखों में बसाऊँ
इन गहरे आँखों के भँवर में
बचना चाहूँ, पर डूब ही जाऊँ
विहंग कुल के कंठ हिलोर–सा
खींच लेता तेरे दृग मौन
तुम देते निमंत्रण मुझको मौन।

अति दूर आकर चितवन अधीर
अधीर चित्त, मन मूक–बधिर
मन करता पास बुला लूँ तुमको,
कंटक–सा चुभता मधुमय समीर
कनक छाया में, गुंजार तड़प–सा
मुझको इंगित करता है मौन
तुम देते निमंत्रण मुझको मौन।

जान मुझको अबोध–अज्ञान
सुलझाते हो मेरे पथ अनजान
झंझावात–सा खेलता नींद से
और फूँकते हो कानों में गान
तितली–सा उड़ा तन–बदन में
मेरे सुख–दुःख के सहचर मौन
तुम देते निमंत्रण मुझको मौन।
जब गुजरता हूँ तुम्हारे बगल से
आने लगते हैं स्वप्न सलोन
सूरज की किरणों से तीव्रतम
तुम देते निमंत्रण मुझको मौन।

□

जबसे तुमने मुझको देखा

जमीन पर पाँव नहीं मेरे
जबसे तुमने मुझको देखा
बदन पर मेरे तितलियाँ उड़तीं
जबसे तुमने मुझको देखा



एक मुसकान-सी है चेहरे पर
एक सुखद एहसास है रहता
दिल में खयाल-सी बनती
आँखों में तेरा चेहरा है बसता
सोते-जागते हर पल हमदम
इन आँखों ने तुझको देखा
जमीन पर पाँव नहीं मेरे
जबसे तुमने मुझको देखा।

खोया-खोया रहता हूँ
संग हवा के बहता हूँ
पंछियों-सा गगन में चहकता
घनेरी कुंतल-सा महकता
सागर की लहरों पर चलता
तेरी छवि अवनि पार देखा
जमीन पर पाँव नहीं मेरे
जबसे तुमने मुझको देखा।

आँखों में नशा-सा छाया है
रातों को नींद नहीं आती
न जाने क्या-क्या होता है
मृदु एहसास नहीं जाती
खग बन उड़ता गगन में
तुझको सागर पार देखा
जमीन पर पाँव नहीं मेरे
जबसे तुमने मुझको देखा।

□

आज भी हो तुम

मेरे दिल की चाहत कल भी तुम थे,
आज भी हो तुम
मेरे दिल की जरूरत कल भी तुम थे
आज भी हो तुम।

कुछ दिन पहले एक अजनबी थे
आज हर धड़कन पर हुकूमत है तुम्हारी
मेरे दिल की इबादत कल भी तुम थे
आज भी हो तुम।



तेरे इंतजार में हर पल इस तरह गुजारा
एक बार नहीं हजार बार तेरी तसवीर निहारा
मेरी दिल की आदत कल भी तुम थे
आज भी हो तुम।

सुनो, कभी तुम नाराज हुए तो मैं झुक जाऊँगा
उदास हुआ अगर मैं, तो गले लगा लेना तुम
मेरे किस्मत की रेखा कल भी तुम थे
आज भी हो तुम।

□

तुम और मैं

तुम और मैं
ओस की बूँद जैसे
दूब पर गिरे
जैसे जिंदगी के सफर में मिले
बन सरित धार सागर से मिले।

तुम और मैं
हवा का झोंका जैसे
पेड़ों से टकराए
जैसे जिंदगी के झंझावात में सने
बन पतवार लहरों से जा मिले।

□

मेरा जीवन बोल रहा है

तेरा दिल खोल के हँसना
मेरा बंधन खोल रहा है
सोना तेरी इन आँखों में
मेरा जीवन बोल रहा है।



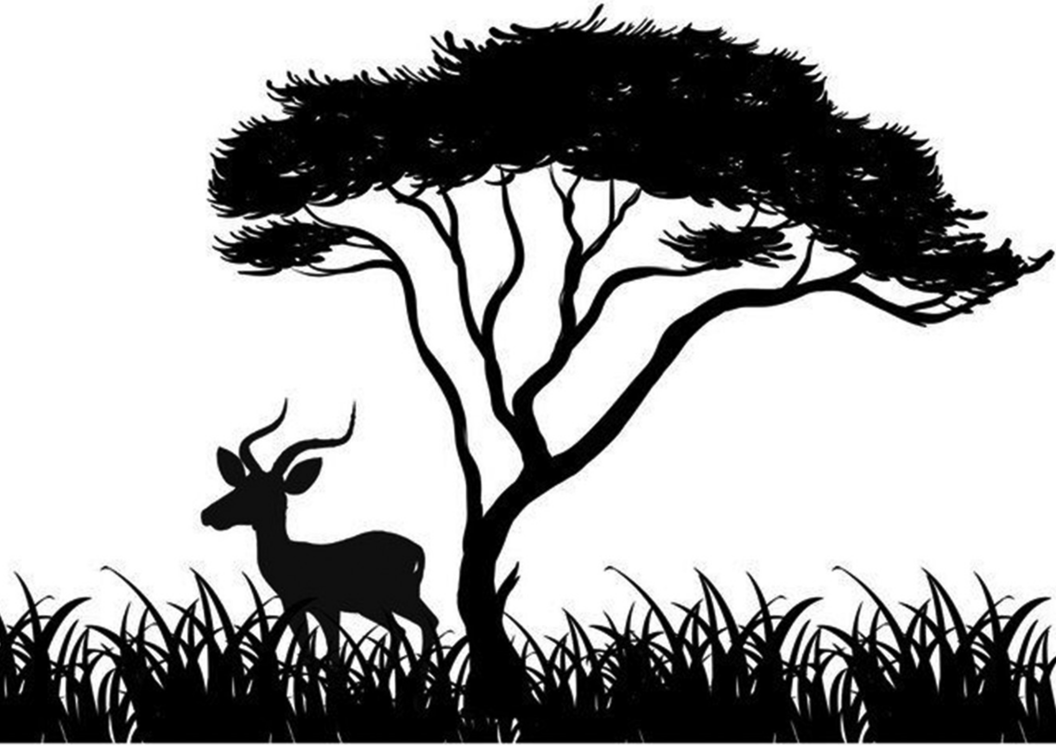
बोले कोयल मंजर की बोली
बोले सूरज समझ ले तारे
गाते गीत मधुर प्रीत के
झरने–नदियाँ चरण पखारे
मैं मोहित कमल नयन के
शशि मुख हर पल निहारे
सोना तेरे इन अधरों में
मेरा जीवन घोल रहा है।
सोना तेरी इन आँखों में
मेरा जीवन बोल रहा है।

दीपक जलते, जलते हैं पतंगे
मन चकोरे आसमाँ निहारे
उठती है जब पीर की बदली
मन का पंछी उड़कर हारे
जीवन के इन तूफानों में
मेरा मन बस तुम्हें पुकारे
सोना तेरे केश जाल में
मेरा जीवन डोल रहा है।
सोना तेरी इन आँखों में
मेरा जीवन बोल रहा है।

□

प्रियवर तुमको कैसे पाऊँ मैं

नील गगन में बिजली जैसी
छवि बनती हर पल तेरे जैसी
आँखों में बनते इन चलचित्रों को
साँसों संग न बाँध पाऊँ मैं।
प्रियवर तुमको कैसे पाऊँ मैं?



सूरज की किरणों सी मचलती
शशि किरणों–सी मदमाती चलती
इन प्रकाश किरणों के कण को
कितना ढूँढ़ूँ, न पहचान पाऊँ मैं।
प्रियवर तुमको कैसे पाऊँ मैं?

सोते सागर के धड़कन–सी
बन लहरों के अकड़न–सी
मन में उठती मधुमय तरंगों को
ध्यान दूँ, पर न सुन पाऊँ मैं।
प्रियवर तुमको कैसे पाऊँ मैं?

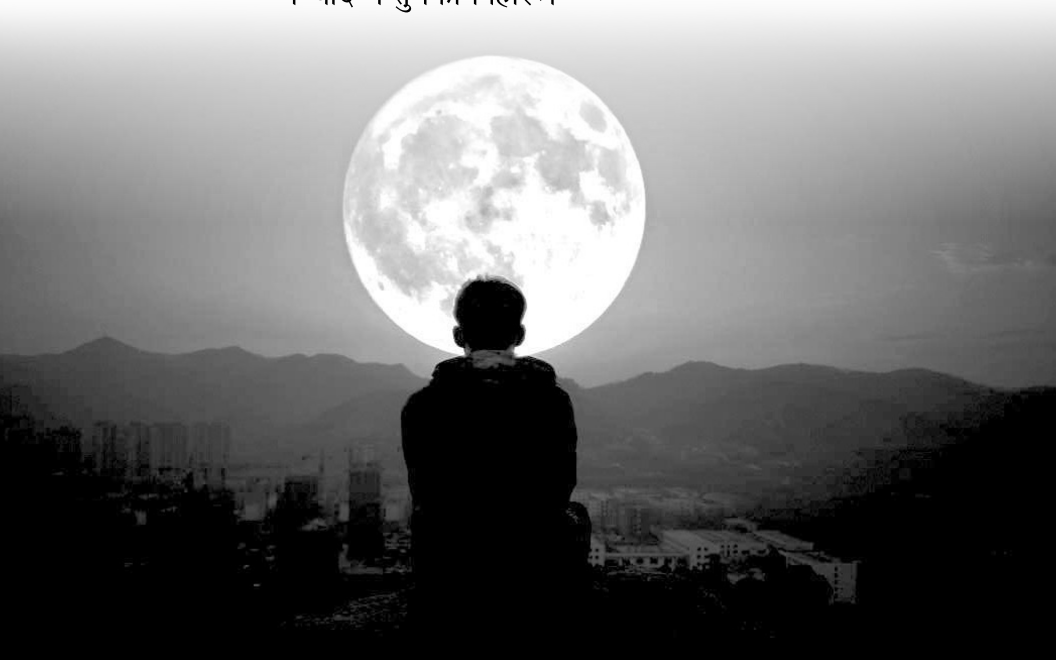
वो तारों संग आते–जाते
अपलक चितवन में बस जाते
उस मृगनयनी की छाया को
छू भी न सकूँ, अकुलाऊँ मैं।
प्रियवर तुमको कैसे पाऊँ मैं?

चुपके–चुपके आते उर में
छुप जाते साँसों की लय में
मानस में आते हैं निशिदिन
देखूँ हर पल, न रोक पाऊँ मैं
प्रियवर तुमको कैसे पाऊँ मैं?

□

चाँद में तुमको निहारूँ

मैं चाँद में तुमको निहारूँ
आसमान में पंख पसारूँ
दूर–दूर एकटक देखूँ तुमको
बियाबान में तुम्हें पुकारूँ
हर सुख, हर दुःख, हर वियोग में
हर पल एक नई राह दिखाते हो
पतझड़ वसंत सावन के संयोग में
सूरज–सा तुम गीत नया गाते हो
घनघोर घटा में तुमको खोजूँ
संग तेरे मैं कभी न हारूँ
मैं चाँद में तुमको निहारूँ।



कोमल भावों को आज तारे गिनेंगे
ओस की बूँद फूलों में मिलेंगे
इंद्रधनुष पंखुड़ी तितली–सा उड़ेंगे
दुविधा के पल में जुगनू–सा जलेंगे
हर साँस, हर उच्छवास में, तुमको खोजूँ
तेरी मुसकानों के तारों का व्योम बनाऊँ
मैं चाँद में तुमको निहारूँ।

□

तुम आती हो

तुम आती हो
बैठ मेरे सामने
सपनों के फूल खिलाती हो।
पदचाप निस्वर, बजती छम-छम
साँसों में उठते स्पंदन क्रम
तुम आती हो,
मन मरुस्थल में
हरियाली के बीज उगाती हो।



अपलक देखूँ तुमको मैं ऐसे
शब्दों के बाण न छूटें जैसे
तुम आती हो,
बोझिल उर में
शाश्वत प्यार लुटाती हो।

स्वर्णिम मुसकान में गलता तन
काले मेघ की छाया में ढलता भ्रम
तुम आती हो,
निर्जन सर में
आनंद ज्वार उठाती हो।

जीवन में आए–जाए सुख–दुःख
रहना तुम मेरे नयनों के सम्मुख
तुम आती हो,
जीवन पथ पर
प्रेम सुधा बरसाती हो।
तुम आती हो
बैठ मेरे सामने
सपनों के फूल खिलाती हो।

□

लिखना तेरा नाम

त्रिपथगा के सैकत पर, लिखना तेरा नाम
हर शाम यही था काम, लिखना तेरा नाम
लिखता था जैसे मत्त लहरें छू न सकेगा
कोई बवंडर, झंझावात बन, पी न सकेगा
जैसे कोई शिलालेख, बन जीवन का संदेश
शफरी-सा व्याकुल मन अब जी न सकेगा
इस मधुर अंकन का अब नहीं होगा विराम
हर शाम यही था काम, लिखना तेरा नाम।



तबसे तेरा नाम लिखा, जैसे कोई मन के गीत
फूलों के सौरभ में, तितली के उर्मी, मनमीत
गगन में मेघ लहराए, मेघ में चाँद शरमाए
रतजगा कर बाट जोहता, तारिकाओं की प्रीत
शत–शत पीढ़ी भी, दुहराएगी तेरा नाम
त्रिपथगा के सैकत पर, लिखना तेरा नाम
हर शाम यही था काम, लिखना तेरा नाम।

□

मत देना स्वर

तुमसे मिलकर, सबकुछ कहकर
कुछ ऐसा है, जो रह जाता है
तुम भी उसको मत देना स्वर।
परछाई है मेरे पावन विश्वास की
दौलत है मेरे मूक अभ्यास की
रचना का क्रम आत्मविश्वास की
बढ़ता जाता हर पल जैसे, महीश्वर
तुम भी उसको मत देना स्वर।



वेदना जो मुझको अपनाती है
सच्चाई जो पल–पल सिखलाती है
आस्था है, जो रेत में भी तरी खेती है
देती है हर पल अमरता का वर
तुम भी उसको मत देना स्वर।

साथ चलो, अब दे दो अपनी वृति
इहलोक में जो हो मेरी अनुकृति
युगों–युगों के बंधन की हो आकृति
साक्षी जिसके हैं अवनि और अंबर
तुम भी उसको मत देना स्वर
तुमसे मिलकर सबकुछ कहकर
कुछ ऐसा है, जो रह जाता है
तुम भी उसको मत देना स्वर। □

तुम बिन जीवन अधूरा है

कैसे तुम्हें बताऊँ अब मैं
तुम बिन जीवन अधूरा है
तुम बिन हँसा जोर से जब मैं
बोली खुशियों से पेट भरा है
जब फूट–फूट रोया हर रात
बोली सब नाटक है, नखरा है
कैसे तुम्हें बताऊँ अब मैं
तुम बिन जीवन अधूरा है।



कभी–कभी जब गुमसुम रहता
तोहमत लगी, घमंड से अकरा है
कभी तो समझो, तुम बिन
मेरे अंदर कितना दर्द भरा है
कैसे तुम्हें बताऊँ अब मैं
तुम बिन जीवन अधूरा है।

बेचैनी में, जब तुम्हें पुकारा
बोली बचपना है, अंधरा है
भूलने की जब कोशिश करता
वह पल तुम्हें भी अखरा है
कैसे तुम्हें बताऊँ अब मैं
तुम बिन जीवन अधूरा है।

एक ही जीवन मिलता सबको
जी लो संग जो तुम्हारा है
बिछड़ जाए साथी पथ पर
नहीं मिलता वह दोबारा है।
कैसे तुम्हें बताऊँ अब मैं
तुम बिन जीवन अधूरा है।

मुझ बिन तुम भी बेकल
चिरंजीवी प्यार तेरा है
लोक–लाज सब छोड़–छाड़ के
आओ, शाश्वत प्यार मेरा है
कैसे तुम्हें बताऊँ अब मैं
तुम बिन जीवन अधूरा है।

□

जीवन का चिरंतन

मेरे जीवन का चिरंतन
तुम्हारी पलकों का कंपन
खुलती हैं पलक तेरी
झुकती हैं पलक तेरी
जैसे किसी सपने का खिलना
तेरे अधरों का स्पंदन
तुम्हारी पलकों का कंपन।



एक किरण सपनों की दो
एक चरण मेरे घर कर दो
इष्ट मेरा, तेरा स्वप्न अंश होना
स्पर्श तेरा जैसे विकंपन
तुम्हारी पलकों का कंपन।

जीवन का आधार बनो
कर्तव्य का श्रृंगार बनो
सब समय पराया लगता है
क्षण अपना, पलकों का झंपन
तुम्हारी पलकों का कंपन
मेरे जीवन का चिरंतन।

□

छोड़ जगत् के रस्में सारे

छोड़ जगत् के रस्में सारे
मैं तेरा तुम हुए हमारे
हाथ–में–हाथ लिया एक दिन
काँधे पर सिर रख, सारा दिन
उर लय में नृत्य करता मन
फिर एक दिन तुमने कहा
बैठ सामने सलिल किनारे
मैं तेरा तुम हुए हमारे।



चक्षु कंपन या ज्वार सारा
तेरे समर्पण से, मैं हारा
मौन था संसार सारा
सुन रहा था पेड़ पीपल
झाड़–झंखड़ और सितारे
मैं तेरा तुम हुए हमारे।

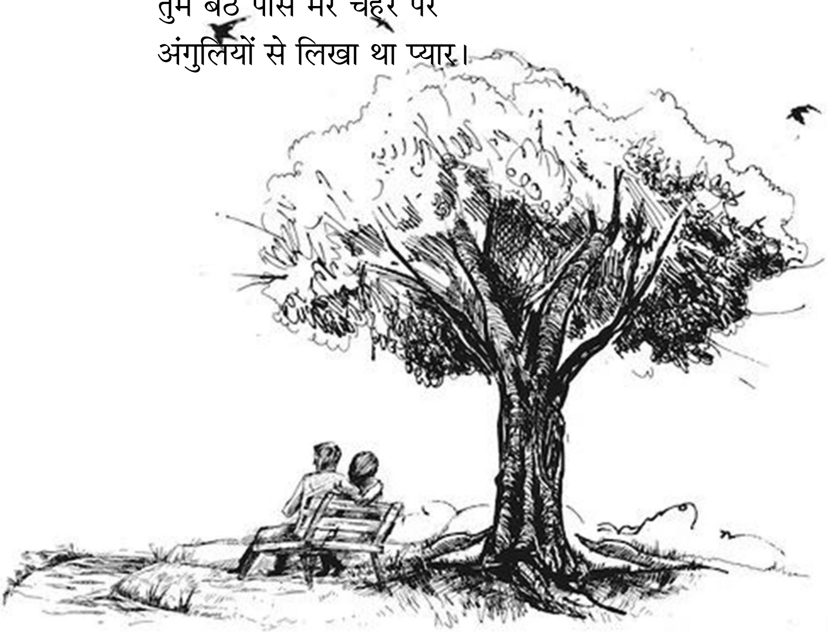
तोड़ दो जीवन के बंधन
गीत बने मेरे सुर रोदन
जीवन–मरण विमुख मन
अब पास रहो तुम सदा
छोड़ सारे अश्रु खारे।
मैं तेरा तुम हुए हमारे
छोड़ जगत् के रस्में सारे।

□

बैठ पास मेरे चेहरे पर

तुम बैठ पास मेरे चेहरे पर
अंगुलियों से लिखा था प्यार
स्वप्न जगाकर एक जीवन का
पल में किया मुझ पर अधिकार

अनिमेष दृगों से देखा तुमने
अधरों से खींची रेखा तुमने
उस इस पार की दुविधा कैसी
सींचा ममत्व सरीखा तुमने
हृदय पटल पर शीश झुकाकर
सागर की लहरों में उठा ज्वार
तुम बैठ पास मेरे चेहरे पर
अंगुलियों से लिखा था प्यार।



अधजगा–सा और अधसोया–सा
तेरे प्रणय में था खोया–सा
बिजली–सी कौंध गई तन में
देखा नयन नीर डुबोया–सा
आग लगा दूँ इस जहान को
जहाँ हो कातर मेरा प्यार
तुम बैठ पास मेरे चेहरे पर
अंगुलियों से लिखा था प्यार।

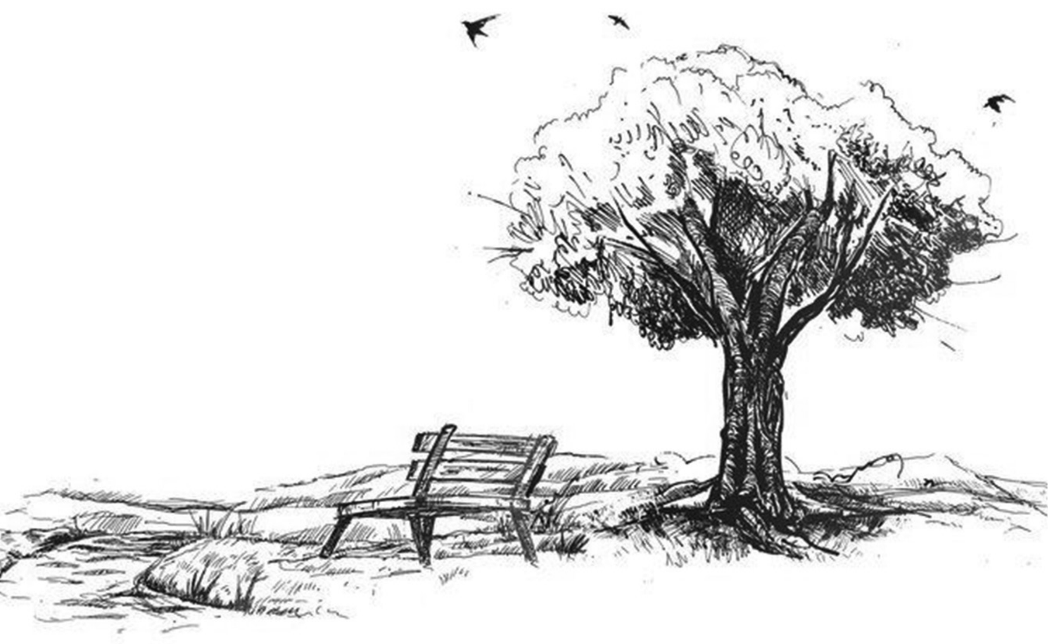
दूरियाँ कैसे मिटें अब
रात–दिन कैसे कटें अब
फिर न लौटा चाँद निर्मम
क्या करूँ कैसे रुके अब
बुझ न पाया, है मृदु जलन
चेहरे पर रखा था जो अंगार
तुम बैठ पास मेरे चेहरे पर
अंगुलियों से लिखा था प्यार।

□

प्यार तेरा रूहानी

वक्त के पहिए से बँधा मुजरिम दिल
कई दफा पिसा, उठा, हुआ तेरे लिए विकल
बार–बार लौट आता, पिसता, मुसकाता
बन लौट, चुंबक की ओर खिंचता सकल
यह कैसी है हसरत, दीपक–सा जलना
जिस्म का पिसना, कटना और मिटना
रूह मेरी कटती है बार–बार, मिटती नहीं
हाँ प्यार तेरा रूहानी है, जो मिटती नहीं।

□



दिल के करीब

किसी का मुसकराना, किसी का उस पर मर जाना
अजीब हैं ये रवायतें, आदतें भी अजीब होती हैं
आदतें बन ही जाती हैं, जो दिल के करीब होती हैं।

आदतें ऐसी जैसे सोंधी सुगंध साँसों में बस जाती
बीते समय की रेख नजरों में उभर–सी आती
न होके भी पास मेरे, रगों में लहू बन दौड़–सी आती
मानस पक्षी के उड़ने की, अजब तरकीब होती है
आदतें बन ही जाती हैं, जो दिल के करीब होती हैं।

कौन आता बार–बार, स्वप्न में मुझको जगाने
बींधकर बंकिम नयन से, धार वारुणी के बहाने
याद में तनु स्पर्श के; है मुझे युग–युग बिताने
चेहरे का लम्स भी, उनके रूह की रकीब होती है
आदतें बन ही जाती हैं, जो दिल के करीब होती हैं।



चाँद को मालूम

बहारें आएँगी, बागों में फूल खिलेंगे
चाँद को मालूम था, हम तुम मिलेंगे।
छिटकेगी तेरी चाँदनी, मेरे चेहरे पर
चलने लगा हूँ मैं, सागर की लहरों पर
लहरों के गीत में, मन के गीत बजेंगे
चाँद को मालूम था, हम तुम मिलेंगे।



कण–कण में, तेरी खुशबू बसने लगी है
रात–दिन, लतिकाएँ कसने लगी हैं
प्रणय सेज पर, एहसास की चादर ओढ़ेंगे
चाँद को मालूम था, हम तुम मिलेंगे।

मिला के नैन मुझसे, घायल कर दिया
उठा के पलकें, मुझको कायल कर दिया
झुका के नजरें, दो से एक, हम तुम बनेंगे
चाँद को मालूम था, हम तुम मिलेंगे।

अब तुम्हीं मेरी चाँदनी, तुम्हीं सूरज हो
साँसों के साथ चलने की जरूरत हो
साथ तेरा छूटा, जान समर्पित कर देंगे
चाँद को मालूम था, हम तुम मिलेंगे।

□

आ गए हो इतने करीब

दिखते नहीं हो मुझको
आ गए इतने करीब मेरे
कभी-कभी तो थोड़ी दूर जा
तब देखूँ जी भर रकीब मेरे।

चादर तेरी खुशबू से महकती है
रातें तेरी यादों में दहकती है



चेहरे पर बसी केशुओं की घटा
माथे पर मेरे होंठ फिसलती है
उर में दहकता एक अंगार है
तू ही मेरे, स्वप्निल खतीब मेरे
दिखते नहीं हो मुझको
आ गए इतने करीब मेरे।

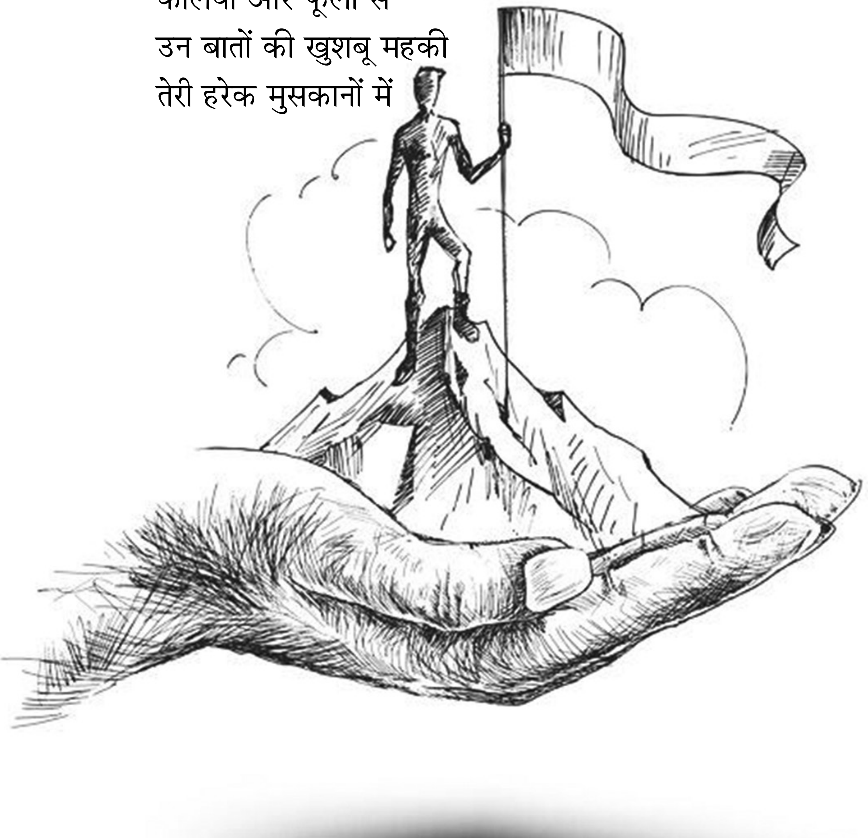
तेरे रुखसार का रसमय निमंत्रण
तुम मेरी आराधना चिरंतन
उस तृषा, उस वेदना को जानता हूँ
जो तरंगित अंग के रोमांच, कंपन
बींध गया तेरे बंकिम बाण से
तू ही मेरा इलाज, तबीब मेरे
दिखते नहीं हो मुझको
आ गए इतने करीब मेरे।

जल बिन मीन, बना असहाय
तेरी मुसकान से हो गया निरुपाय
तेरे उर रख शीश मरना चाहता हूँ
इसके अलावा नहीं कोई उपाय
अब सिखा दो कोई अदीब
रख छाँह सिर पर, कतीब मेरे
दिखते नहीं हो मुझको
आ गए इतने करीब मेरे।

□

नाम मेरा भी

पहली बार जब खुद को देखा
मैंने उनकी आँखों में
मुझे लगा एक सपना
फूल खिले कैसे वीरानों में
जिक्र किया था मैंने केवल
कलियों और फूलों से
उन बातों की खुशबू महकी
तेरी हरेक मुसकानों में



देख रहा था सोच रहा था
मैं तारों को रातों में
पलक खुली तो लहराया आँचल
तेरे हुस्न के तानों में
अलख ख़ुशबू घुलने लगी
कानन–कानन साँसों में
मृदु मलयज है गुंजित
तेरे बोल मेरे कानों में
अब तो चाँद, फूल और ख़ुशबू
नहीं सुहाते बागों में
लगता सारी सृष्टि समाई
एक तेरी मुसकानों में
जिक्र किया था यों ही तेरा
मैंने बातों–बातों में
लिख दिया है नाम मेरा भी
दुनिया ने दीवानों में।

□

ऐसे में वो न याद आ जाए

जब छाएँ काली घटाएँ
महकें बहकी–बहकी हवाएँ
सहम–सहम जाए मेरा मन
ऐसे में वो न याद आ जाए।

उनका आलिंगन कोमल
नरम अमरबेल–सा फैले
सुख–दुःख की लहरों पर
कभी जीवन में, हो न अकेले
मुसकराकर खड़ी अमरता
कहो तो अब मुँह न दिखाए
ऐसे में वो न याद आ जाए।



बहार में न खिले दिल
राह मंजिल है दूर अभी
खिंचती है हृदय पटल पर
अभिलाषा बन मगरूर अभी
हसरतें वही, वही है पीड़ा
आज वक्त भी है शरमाए
ऐसे में वो न याद आ जाए।

आतप पारावार तरल हो
मथकर गरल उगलता
नेह जगी है किस तृष्णा से
तल में बड़वानल जलता
अभी तो कलियाँ खिली नहीं
गुंचा अभी से क्यों मुरझाए
ऐसे में वो न याद आ जाए।

जमाना नहीं बदलता है
एक आध कदम या करवट से
जब सामने हो तुम मेरे
कैसे आँख चुराऊँ झट से
हैं मजबूरियाँ भी दुनिया में
नैन ही कोई फसाना सुनाए
ऐसे में वो न याद आ जाए।

सिहर भरी कँपती आएँगी
फिर मलयानिल लहरें
आशा के अंकुर झूलेंगे
पल्लव पुलकित गहरे
थोड़ा रो ले, थोड़ा हँस ले
कहीं दम ही घुट न जाए
ऐसे में वो न याद आ जाए।

□

भेंट के हसीन क्षण

जब भी देखोगी आईने में अपना तन
बहुत याद आएँगे भेंट के हसीन क्षण
भिगो–भिगो जाएगी पुरवाई पवन
एक टीस उभर आएगी तुम्हारे आनन
सँभाले न सँभलेंगे तुम्हारे चरण
भटकेगा, कहीं चौकड़ी भरेगा मन
अधरों पर देगी दस्तक नीरव वन
दाँतों के नीचे दबकर करेगी समर्पण
विकल हो जाएँगे कनकाचल चितवन
नेत्रनीर विहर, प्रसर, धाराधर नयन
जब भी देखोगी आईने में अपना तन
बहुत याद आएँगे भेंट के हसीन क्षण।

□



सोलह श्रृंगार

जब भी करते हो तुम सोलह श्रृंगार
मौन समर्पण का करते हो इकरार
मुसकराती चाँदनी, खिलखिलाती धूप तुम
प्रीत का प्रतिबिंब, लाज का रूप तुम
कजरारे नैन करते, कामना अभिसार
मौन समर्पण का करते हो इकरार।

चंचल शिशु–सी भोली हँसी तुम्हारी
करद, बरद चितवन, बसी तुम्हारी
देख कनकाचल तन, चकित संसार
मौन समर्पण का करते हो इकरार।

शब्द है नि:शब्द, मुखर तेरे श्रृंगार
भावना का रूप तेरा कर रहा संचार
प्रीतम का कर रहे नीरव सत्कार
मौन समर्पण का करते हो इकरार।

□



सोना, तुमको ख्वाबों में देखा है

सोना, तुमको ख्वाबों में देखा है
राधे कृष्णा की किताबों में देखा है
तेरी पलकों का झपना फिर खुलना
निमिष नयन, फिर उसका मिलना
तेरा हर नूर इबादत में देखा है।
सोना, तुमको ख्वाबों में देखा है।



तुमुल तरंगों की तुम तरणी
मधु मकरंद धवल की धरणी
तेरे ताप प्रखर, अजाबों में देखा है
सोना, तुमको ख्वाबों में देखा है।

अनियारे नयन के तारे द्वय
विशिख चपल नर्तन निर्भय
तेरी नीरवता, महताबों में देखा है
सोना, तुमको ख्वाबों में देखा है।

व्योम–व्योम है गान तुम्हारा
विद्यमान अनमृत दान तुम्हारा
तेरा वरद, सिताबों में देखा है
सोना, तुमको ख्वाबों में देखा है।

□

जीने का वरदान

निराला तेरा, जीने का वरदान
सित–असित, मिलन–विरह सब
अनुरंजित भी, मिटने का अभिमान
निराला तेरा, जीने का वरदान।

इसमें है सुधियों का कंपन
सुप्त व्यथाओं का आलिंगन
स्वप्नलोक की परियों की मुसकान
निराला तेरा, जीने का वरदान।



दिखा है अंधड़ का शैशव
छिपा है सपनों का केशव
गर्जना लहरों का गाती गान
निराला तेरा, जीने का वरदान।

इंद्रधनुष–सा घन का अंकन
पूँजीभूत तम, तुहिन–सा स्पंदन
हर पल में छिड़ता नए–नए तान
निराला तेरा, जीने का वरदान।

सिकता में सपनों को अंकित
दीपशिखा–सा अगम विकंपित
सींच श्रम सीकर, शिला में जान
निराला तेरा, जीने का वरदान।

□

पंथी अकेला

राह पर पंथी अकेला
मंजिलें हैं दूर मगर
संग हौसलों का मेला
राह पर पंथी अकेला।



जब घेरती अमा बन
रिमझिम घटा घिरा घन
थकन से हो अधर सूखे
चमक बुझे, पलक रूखे
आतप चितवन में जहाँ
शत चपला का दीप खेला
राह पर पंथी अकेला।

मंद चरण, नभ के तारे
छोड़ दे जब साथ सारे
झंझा झकोर संकल्प हिलते
शूल खिलते, धूल मिलते
श्रम सीकर से बाँध देंगे
अंक में ले तिमिर बेला
राह पर पंथी अकेला।

फिर गहेंगे एक कहानी
छोड़ अमरता की निशानी
अनवरत चला मनुज पद
करने को निर्माण उन्मद
चीरकर हर विघ्न–बाधा
चाहे जितना हो कुबेला
राह पर पंथी अकेला।

मंजिलें हैं दूर मगर
संग हौसलों का मेला
राह पर पंथी अकेला।

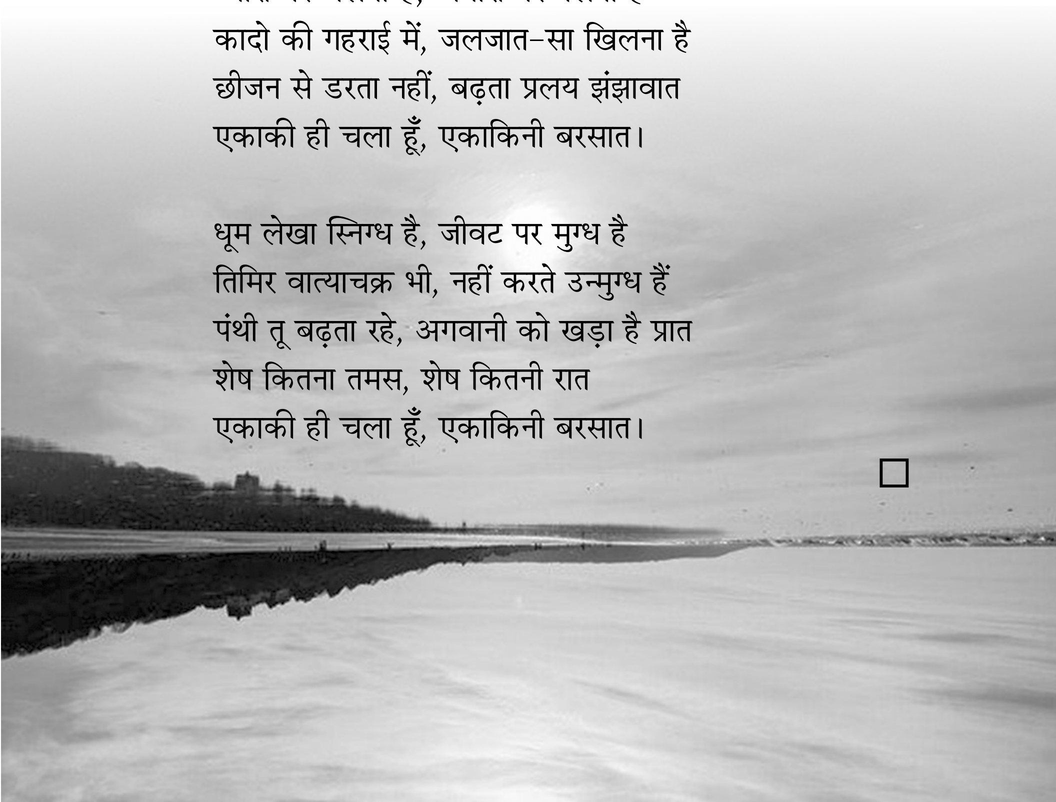
□

शेष कितना तमस

शेष कितना तमस, शेष कितनी रात
एकाकी ही चला हूँ, एकाकिनी बरसात।
मन का दीपक, शतझंझा में निश्चल
तन की वर्ती, कोटि–कोटि उर्मी में अतल
हर लहरों के पार गई, मानव की बात
एकाकी ही चला हूँ, एकाकिनी बरसात।

ज्वारों पर चलना है, अंगारों पर पलना है
कादो की गहराई में, जलजात–सा खिलना है
छीजन से डरता नहीं, बढ़ता प्रलय झंझावात
एकाकी ही चला हूँ, एकाकिनी बरसात।

धूम लेखा स्निग्ध है, जीवट पर मुग्ध है
तिमिर वात्याचक्र भी, नहीं करते उन्मुग्ध हैं
पंथी तू बढ़ता रहे, अगवानी को खड़ा है प्रात
शेष कितना तमस, शेष कितनी रात
एकाकी ही चला हूँ, एकाकिनी बरसात।



बता कोई औजार

ओ ब्रह्मज्ञानी साकार, बता कोई औजार
रिश्तों की गाँठें खोलूँ, दिखलाऊँ प्यार
घिसते तन, टिसते मन को साफ करूँ
बन बाती तेरी रूह की, कर दूँ गुंजार
ओ ब्रह्मज्ञानी साकार, बता कोई औजार।

कहाँ–कहाँ क्या अटका, क्या–क्या है जाम
रिश्तों के रास्ते हैं बंद, अकुलाऊँ साँसें थाम
तरकीब बता, घटे जीवन घर्षण का आधार
मन में उजियारा भरें, तन को हो स्वीकार
ओ ब्रह्मज्ञानी साकार, बता कोई औजार।



स्वाभिमान

जिसके पीछे बावला बनकर
शरणागत स्वाभिमान छोड़कर
जब चल दिया, मुँह फेरकर
मुझ पर मेरा अभिमान हँसा
रोक न पाता अपने आँसू
बेसुध, बेकल, निर्झर आँसू।



तुझमें स्वयं समाहित कर
कर देना चाहा प्रेम अमर
राह कठिन, चल दिए छोड़कर
मुझ पर मेरा सम्मान हँसा
रोक न पाता अपने आँसू
बेसुध, बेकल, निर्झर आँसू।

मेरा पूजन, आराधन प्रियवर
मेरा पूर्ण समर्पण तुमपर
जब मेरी कमजोरी कहकर
मुझ पर मेरा पूजित इनसान हँसा
तब रोक न पाता अपने आँसू
बेसुध, बेकल, निर्झर आँसू।

□

मुझसे आज चाँद ने कहा

मुझसे आज चाँद ने कहा
मानव जीवन नदी–सा बहा
वेग प्रबल है काल की
तीखी है धार, मुसकान की
इमारतें कितने सपनों की
वक्त धार के, पल में ढहा
मुझसे आज चाँद ने कहा।



नभ में सजी कितनी तारिकाएँ
अँधेरे में भी मंजिल दिखलाएँ
ताप गगन सहकर मुसकाए
फिर भी अश्रु नित्य बहा
मुझसे आज चाँद ने कहा।

उसके भ्रम से क्यों चिल्लाता
धार पुलिन पर आता–जाता
विषाद लहरों संग बहाता
विकट वेदना जग मौन सहा
मुझसे आज चाँद ने कहा।

देगा साथ वही, जो अपना
साथ नहीं, जो केवल सपना
गतिमान बन कुंदन–सा तपना
रूह ने, रूह को हर पल गहा
मुझसे आज चाँद ने कहा
मानव जीवन नदी–सा बहा।

□

साकार स्वप्न

स्वप्न मेरा साकार हुआ तो
चंदा धरती पर मचलेगा
ओस कण बन मेरे मन का
प्रसून पंखुड़ी पर छलकेगा
मूक ह्दय में गूँजेगी
मचलेगी कोमल सी प्रतिध्वनि



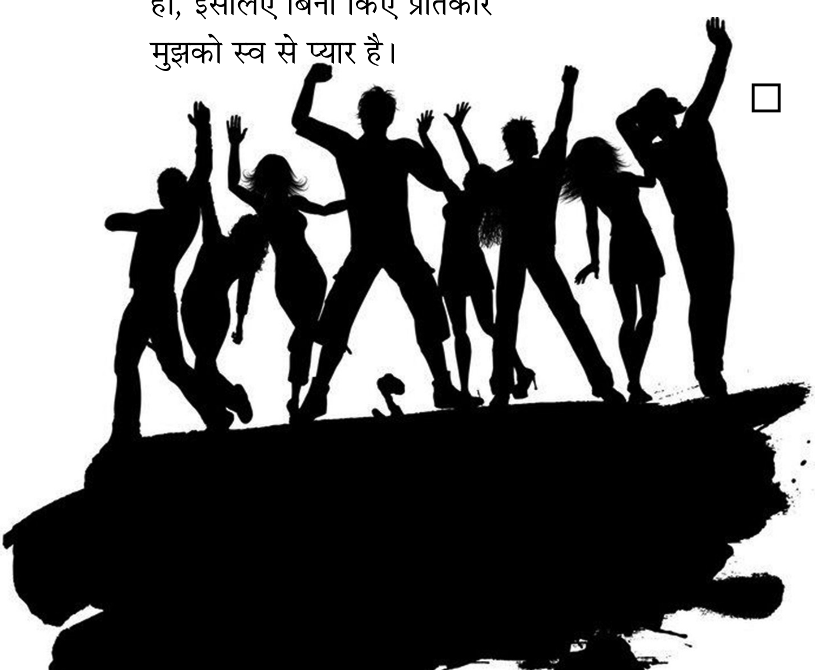
मधु ऋतु के आगमन–सा
सुरभित होगा मन अवनि
संवेदन सागर–सा छलकेगा
आँखों से, आँसू ढलकेगा
स्वप्न मेरा साकार हुआ तो
चंदा धरती पर मचलेगा।

आँसू सावन–सा निखर
धोएँगे मेरे करुण आतप
निविड़ वन के अराल पथ
गुंजित वितान प्रखर तप
शुभ्र ज्योत्सना–सा थिरकेगा
उलका–सा टूट–टूट चमकेगा
स्वप्न मेरा साकार हुआ तो
चंदा धरती पर मचलेगा। □

मुझको स्व से प्यार है

मुझको स्व से प्यार है
यह मेरा अधिकार है
मुझमें खामियाँ हैं लेकिन
कृति हूँ, उस कृतिकार की
जिसने मुझे धरा पर भेजा
अपनी श्रेष्ठता स्वीकार की
फिर मैं क्यों करूँ उपेक्षा
उसकी कृति की
करूँ कुछ ऐसा, चाँद लगे
उसकी कीर्ति की
हाँ, इसलिए बिना किए प्रतिकार
मुझको स्व से प्यार है।

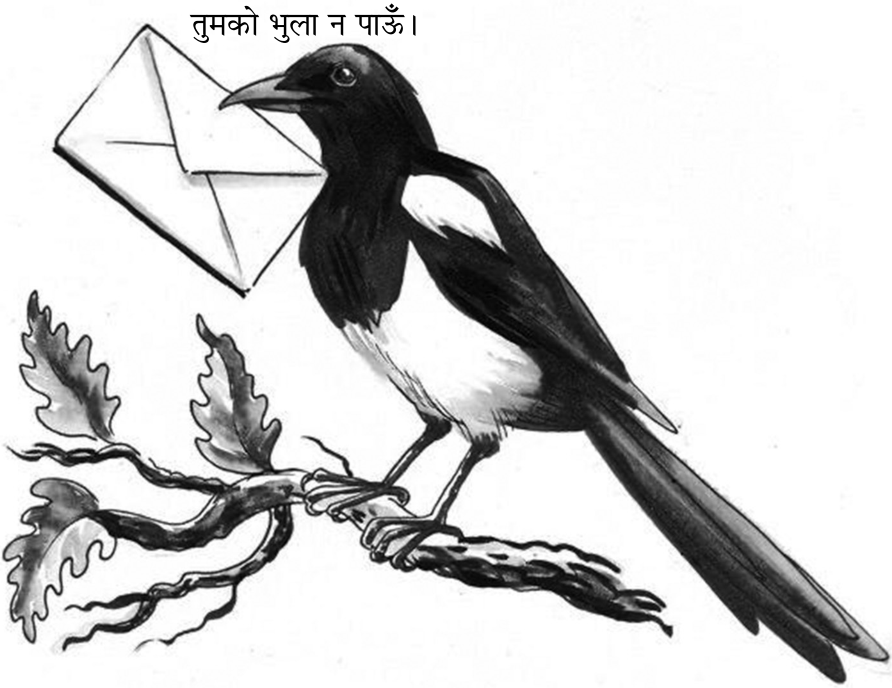
□



तुमको भुला न पाऊँ

सूर्य किरण की उलझन में
बन आभा, मिट क्षण में
आतप ढूँढ़ूँ कण–कण में
नयनों को दिखा न पाऊँ
तुमको भुला न पाऊँ।

मेघों में बिजली–सी छवि
बनती–मिटती जैसे अवि
पुतली में ढूँढ़ूँ प्रतिच्छवि
जिसको समा न पाऊँ
तुमको भुला न पाऊँ।



बन तारक, गीत गाते
निक्षेप चितवन बन जाते
शीतलता भी नहीं सुहाते
मन को पहचान न पाऊँ
तुमको भुला न पाऊँ।

चुपके–चुपके वह आते
उच्छवास उर में समाते
देखूँ बस आते–जाते
उसको रोक न पाऊँ
तुमको भुला न पाऊँ।

नींद कहाँ आए अज्ञानी
सागर लहरों–सी रूहानी
कह दे सब करुण कहानी
खुद को सुला न पाऊँ
तुमको भुला न पाऊँ।

चपल पारद से मोती
दृगों से अनवरत खोती
फिर भी सपने उनके बोती
अगम आँक न पाऊँ
तुमको भुला न पाऊँ।

□

पल भर को क्यों प्यार किया

साँस में आरोह, अवरोह उर में
ज्वलित चितवन, मलार सुर में
सम हर, रच अभिनव संसार
अजर ज्वार का श्रृंगार किया
पल भर को क्यों प्यार किया।

लय–छंदों में जग बँध जाता
सित मोती का रेणु उड़ाता
चकित, कुछ कह भी नहीं पाया
चिर विरह स्वीकार किया
पल भर को क्यों प्यार किया।



लघु तृण से, तारों तक बिखरा
मुक्त मलय संग, सारंग निखरा
चिर मुक्त तुम्हीं ने जीवन का
मधु जीवन का आकार दिया
पल भर को क्यों प्यार किया।

तम सागर में अनजान बहा
पुलक–पुलक, अचिर प्यार सहा
जब सपनों का लोक मिटाना था
उर का उर से, व्यापार किया
पल भर को क्यों प्यार किया।

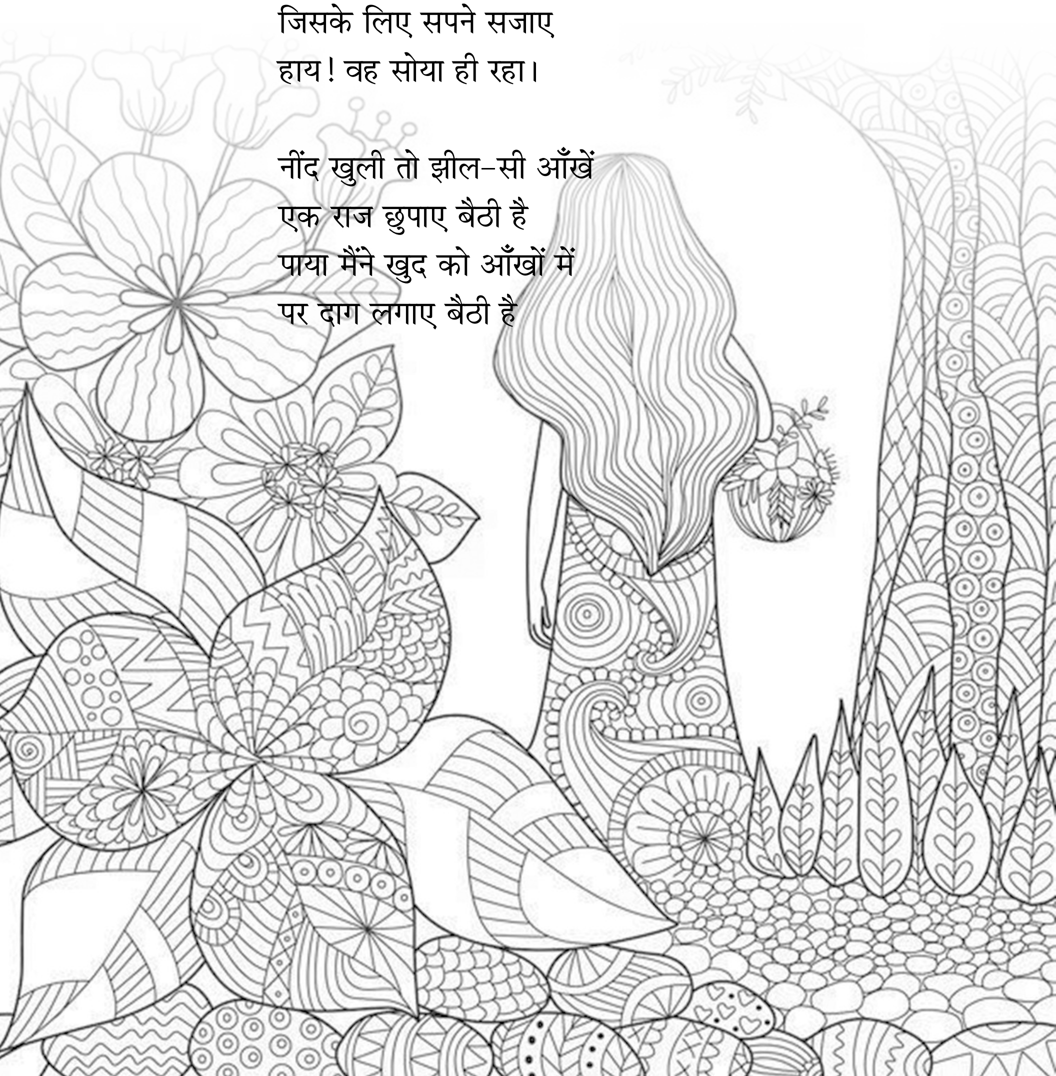
वह पल अजर हुआ है आप
वह नेह मुझे रहा है नाप
चाहे रच लो नव इतिहास
चिर आसव से उद्धार किया
पल भर को क्यों प्यार किया।

□

जिसके लिए सपने सजाए

रोता है सहमा दिल मेरा
कोई सुना कोई बेखबर रहा
जिसके लिए सपने सजाए
हाय! वह सोया ही रहा।

नींद खुली तो झील-सी आँखें
एक राज छुपाए बैठी है
पाया मैंने खुद को आँखों में
पर दाग लगाए बैठी है



दुनिया को भुलाकर बैठे हैं
और याद नहीं मेरा भी रहा
जिसके लिए सपने सजाए
हाय! वह सोया ही रहा।

शाश्वत है, आप बिन
मेरी जिंदगी अधूरी है
दूर हूँ इतना क्यों उनसे
कैसी यह मजबूरी है
लाख कोशिशें की मैंने पर
वह खोया था, खोया ही रहा
जिसके लिए सपने सजाए
हाय! वह सोया ही रहा।

न लीजिए इम्तिहान इतना
दम निकल जाए आजमाने में
खुशियाँ कितनी लुटा चुका मैं
हम दम आपको अपनाने में
नभ आनत है अवनि पर
परस भ्रम में खोया ही रहा
रोता है सहमा दिल मेरा
कोई सुना कोई बेखबर रहा
जिसके लिए सपने सजाए
हाय! वह सोया ही रहा।

□

फिर उदास ये दिल

सूर्य की पहली किरण जब धरा पर आई
स्वप्न से जागा मैं, एहसास था आप आई
मुसकराता रवि था या आपका चारू चेहरा
विस्मित देखता रह गया दृश्य सुनहरा
संचयी भ्रम से हुआ इस कदर मैं बेखबर
नाजुक एहसास को भेद गई अगली किरण
पोर–पोर टूट टहनी का दहका, महका दिल
याद करके आपको फिर उदास ये दिल।

छुआ मेरे तन को जो शबाबी मिलित कलियाँ
आई मलय बयार लगी आपकी अंगुलियाँ
पत्ते हिले अशोक के या बाजे सनम पायल
लोल–कपोल, अधर के पाटल रंग करे घायल
मिल के हरित डाल से; न छेड़िए सरगम
अनजान पागल पिक, क्यों पुकारे हरदम
अगवानी करें हरसिंगार, बकुल कहे मिल
याद करके आपको फिर उदास ये दिल।

□



कितना कठिन प्रणय है

मधुरिम–मधुरिम मोहक बातें
उड़ता मेरा खग निलय है
जब दूर हुए मुझसे तुम देखो
कितना कठिन प्रणय है।

रातें यों ही कट जाती हैं
अब नींद कहाँ आती है
मन खोया–खोया रहता
तसवीर उभर आती है
दृग से झरते अश्रु कितने
कितना कठिन हृदय है
कितना कठिन प्रणय है।



तन से जागे, सपनों में खोए
आँखें तेरी बाट हैं जोहे
अंतर के हर शिर में सुलगी
दृग वर्षा, ज्वाला न भिगोए
दूर रहके भी पास खड़े
कितना संगदिल संशय है
कितना कठिन प्रणय है।

आया–गया कौन, नहीं ध्यान
चाँदनी नहीं देती आराम
बन छाया, हर पल रहते
न छूँ पाऊँ, अकुलाऊँ अभिराम
उच्छवास बन छिपते मन में
कितना सुंदर निश्चय है
कितना कठिन प्रणय है।

स्मृति बन खटकते निशिदिन
ओ निष्ठुर, मेरे पलछिन
मौनमंत्र की व्यथा कहूँ क्या
जीवन पास तेरे हो हर दिन
प्रणय क्षुधा से आक्रांत विचरते
मुझको अमन ये बाहु वलय है
कितना कठिन प्रणय है।
जब दूर हुए मुझसे तुम देखो
कितना कठिन प्रणय है।

□

जब आता तेरे द्वारे

जब भी आता तेरे द्वारे
वरण करते नयन तुम्हारे
जब जाने की बारी आती
अश्रु रहते नयन तुम्हारे।



मैं आता, तुम मुसकाते
तन्मय कार्य में लग जाते
हँसता द्वार, चहकता परिसर
पीछे रहते क्यों पग तुम्हारे
लगता है एकाकी पथ पर
अटल होगा साथ तुम्हारे।

मौन तुम्हारा, मुझसे कहता
नयन तुम्हारे तकता रहता
सब लोग मुझे घेरे हैं रहते
तुम जैसे अनदेखा, सहता
मौन प्रतीक्षा में लगता है
रतजगा करेंगे, नयन तुम्हारे।

यों अनदेखा करके तुमने
अपने दिल की बात बोल दी
सूरज–चाँद सभी को तुमने
संबंधों की राज खोल दी
लगता है मलिन तन को
आँचल से धोएँगे कर तुम्हारे।

अब कैसी है उलझन मन में
साथ मरे साथ जिए जीवन में
बाट जोह रहे हो मेरा
बनके रूह, बसे कण-कण में
लगता है खो जाऊँ भँवर में
बन पतवार साथ तुम्हारे
जब जाने की बारी आती
अश्रु रहते नयन तुम्हारे।

□

वक्त-बेवक्त उनकी याद आई

मधुमय उदास सी तन्हाई
लेती है हर रात अँगड़ाई
दर्द सीने में मचलता ऐसे
वक्त–बेवक्त उनकी याद आई।

फैलाती है जब उषा राग
जग कहता है उनका विराग
प्रीत, मोह, घृणा, पीड़ा
मिलकर बिखेरे आतप आग
कौन अकिंचन अति आतुर
निगाहों ने कहानी दुहराई
वक्त–बेवक्त उनकी याद आई।

कहता दिगंत से मलय पवन
हर दिक् लाज भरी चितवन
लहरों की क्रीड़ा भी चंचल
बिखरा देते हैं अखिल भुवन
सांध्य गगन के रंगमयी पर
तारों ने भी निगाह दौड़ाई
वक्त–बेवक्त उनकी याद आई।

सुधि के सुरभित नेह धुले
आतप के चुंबन से निखरे
विद्युत के दे चरण उन्हें
उड़ते हैं क्षण पुलक भरे
मसि सागर का पंथ बना
काँधे पर जो जुल्फ लहराई
वक्त–बेवक्त उनकी याद आई।

शून्य के नि:श्वास ने दी
यह स्पंदन अंक व्यथा के
चिर उज्ज्वल है तम के शैल
बिखरी विस्मृत क्षार कथा के
कैसे थाह लगाऊँ मन रे
प्रीत की, जीवन की गहराई
वक्त–बेवक्त उनकी याद आई।

मेरे गम के, तेरे सितम के
अनुमान लगाना है मुश्किल
रात में जब सब सो जाएँ
यादों को सुलाना है मुश्किल
साँसों की समाधि है तन
फिर दिल की चोट उभर आई
वक्त–बेवक्त उनकी याद आई।



जब आया तेरे देस में

कुछ कहा रुककर पवन ने
कुछ सुना झुककर गगन ने
शाम भी लिख गई अधूरा
उषा भी न पढ़ पाई पूरा
नाप डाला उस नयन ने
एक मधुरिम सजल निमेष में
जब आया तेरे देस में।

विपिन विरह का जलन
मरकट मुक्ता का चलन
तड़ित जो नीरद में बसा
आवेग जो धमनी को कसा
तृषा सलिल बन गया
तेरे पुलक के उन्मेष में
जब आया तेरे देस में।



झर सुमन ने विरह बताया
मूक तृण ने जिरह सुनाया
टूट तारिका भी बोली
भेद चातकी ने खोली
हटकर फिर भी स्वप्न बसा
सुरभित साँसों के परदेश में
जब आया तेरे देस में।

चाँदनी को बादलों से घेरते
सौरभ से सने क्षण बिखेरते
मुखरित स्पंदन का मेला
अनवरत चला पंथी अकेला
सत्य की साधना यही है
है लिखा अमिट संदेश में
जब आया तेरे देस में।

□

यहाँ भी रह जाओगे

यहाँ भी रह जाओगे
जब तुम चले जाओगे
जैसे रह जाता है,
तृणपात पर तुहिन कण
पहली बरसात के बाद
धरती की सौंधी सुगंध
बोल तेरे खुशनुमा
बोलेगी आँखों की चमक
कुछ अधूरा सा सही, पर
दर्पण–सा रह जाओगे
जब तुम चले जाओगे।



यहाँ भी रह जाओगे
जैसे रह जाती है,
सकार में भी तारे
गुंचा के मुरझाने पर भी
महक ढेर सारे
मंदिर की घंटियों में तुम
नदियाँ भी तुम्हें पुकारें
जीवन की डगर पर
थोड़ा सा रह जाओगे
जब तुम चले जाओगे।

यहाँ भी रह जाओगे
जैसे रह जाती है,
दमकती प्रार्थना मन में
वसंत के जाने के बाद भी
कलरव रहता उपवन में
तुम्हारे होने का एहसास
जीवट बनाए, पल में
सूरज की किरणों जैसे
कण–कण में बस जाओगे
जब तुम चले जाओगे
यहाँ भी रह जाओगे।

□

मिल जाएँ मुझे आप

माँगने से मिलती अगर मन की मुराद
मैं और कुछ न चाहूँ, मिल जाएँ मुझे आप
चाहत मैं करूँ क्यों अब ये कलियाँ खिल जाएँ
गगन के विकल घन, थम थोड़ा बरस जाएँ
खिजाओं के मंजर, फिजाओं से सँवर जाएँ
मेरे एक इशारे पर, चाँद भी मुसकरा जाएँ
मैं जानता हूँ जब मिल जाओगे मुझे आप
मुझे मिल जाएगी, बरबस सारी मुराद
माँगने से मिलती अगर मन की मुराद
मैं और कुछ न चाहूँ, मिल जाएँ मुझे आप।



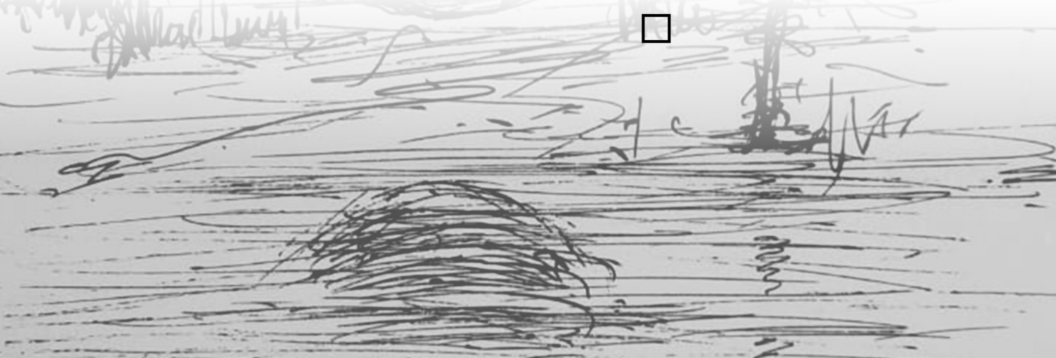
न मैं करूँ तमन्ना, महकी–महकी घटाओं से
न मुझको हो आरजू, वक्त की सदाओं से
हर पहर मचला है नव मधुतिक्त लहर,
नव जीवन का सृजन, आपकी निगाहों से
मैं जानता हूँ जब मिल जाओगे मुझे आप
मुझे मिल जाएगी, बरबस सारी मुराद
माँगने से मिलती अगर मन की मुराद
मैं और कुछ न चाहूँ, मिल जाएँ मुझे आप।

□

कोमल उर का साथी

कोमल उर का साथी, मेरे सपने में आती है
है आँखों से ओझल, वह प्रेमगीत गाती है
उसके एहसास से उर महकने लगता है
हृदय बींधकर, मुझे बदलने लगता है
सुरतरु सुधिरंजित मृदु तनु–सी काया
अनुताप प्रखर दृग ने प्रेमराग गाया
अनजान रहने की राह, नजर नहीं आती है
कोमल उर का साथी, मेरे सपने में आती है
है आँखों से ओझल, वह प्रेमगीत गाती है।

लहराता आँचल है जैसे, मेरी जीवन की धारा
कृष्ण कुंतल में बसा, मेरी लहरों का किनारा
बींध गया हूँ मैं, कृष्ण बंकिम नयन से
पल्लवित सुरभित चितवन चारू चमन से
मुसकराकर, नजरों से ओझल हो जाती है
कोमल उर का साथी, मेरे सपने में आती है
है आँखों से ओझल, वह प्रेमगीत गाती है।



शून्य के आकार-सा वह कौन है?

दिवा–रात्रि में अंतर नहीं
वेग मारुत का है प्रतिकूल
सागर की गर्जना प्रलय–सी
घिर आई घटाएँ पर्वत पर संकुल
हाथ पकड़ उस पार कराता जो
माघ के धूप–सा वह कौन है ?



चहुँ ओर जब हो असित घन
बुझ जाएँ सारे नक्षत्र प्रकाश
वेदना के शिखर पर चढ़ हाहाकार
अपने भी करते जब मेरा उपहास
मन तरंगों–सा बुलाता उस पार जो
बयार के संगीत–सा वह कौन है ?

जग हँसता, मेरी आँखें निर्जन
करुण क्रंदन का असीम सूनापन
बहती पीड़ा नयनों से झर–झर
अविराम जला दीपक–सा मन
मौन के आर्कर्षणों से खेलता जो
शिशु की मुसकान–सा वह कौन है ?

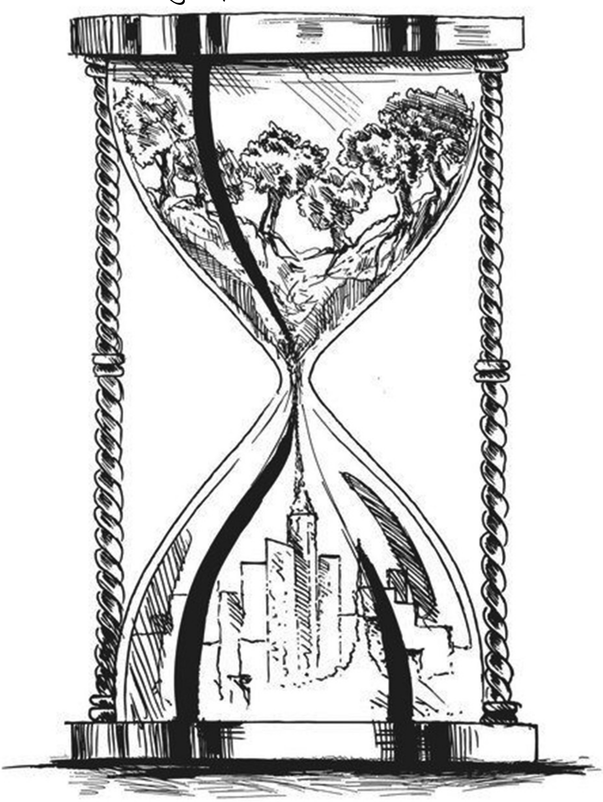
दो प्राणों से उठनेवाली मधुमय
झंकृत अलसाई जीवन की लय
आरोहण के सोपान लगी काया में
रहस्यमयी स्पर्शों का प्रलय
आलिंगन कर संचित तपन मिटाता जो
हृदय के द्वार खोलता वह कौन है ?

साथ बैठने में सुख अपार
बाँहों का उपधान स्वीकार
झरने के नीचे धूम–धूम
अरुणाय शिखर पर रहना स्वीकार
सुरभि बन थपकियाँ देता मुझको
शून्य के आकार–सा वह कौन है ?

□

कौन हो तुम इस अंतर्मन में

नित कसक जगाता नए–नए
निज छाया से अकुलाता हूँ
प्यासे नयनों में उमड़–घुमड़
बरसकर भी, प्यासा रह जाता हूँ
तन की उद्वेलित तरंग पर
रजनी के अंतिम पहर में
कौन हो तुम इस अंतर्मन में।



लगता है कोई शोणित में
निरंतर स्वर्ण तरी खेता है
गूँजता एक संगीत–सा फिर
बाँहों में रह–रह, भर लेता है
पा लिया किसे मैंने अब
खोया क्या–क्या, राह बंकिम में।
कौन हो तुम इस अंतर्मन में।

निज मन पीड़ा कैसे पहुँचाऊँ
करुण भाव कैसे भर लाऊँ
क्या छूती नहीं, मेरी आहें तुमको
इस आग में, तैर नहाऊँ
मृदुल अंक भर, दर्पण–सा सर
बंदी बनाया मुझे निमिष में
कौन हो तुम इस अंतर्मन में।

□

सपन हमारे

परी जहाँ के चाँद–सितारे
ऐसे हैं मोहक सपन हमारे
बन–बनकर मिटते हैं जैसे
भीत रेत के, सरित किनारे
ऐसे हैं मोहक सपन हमारे।

लहरें आती हैं और जाती
पुलिन पर, रेखाएँ रह जाती
इन रेखाओं को कौन सँवारे
ऐसे हैं मोहक सपन हमारे।



कड़ी धूप में मेघ हैं छाए
पल में इंद्रधनुष बन आए
जाते पल को कौन पुकारे
ऐसे हैं मोहक सपन हमारे।

दर्पण में चाँद की छाया
कभी नहीं मेरे हाथ आया
चाहे जितना हाथ पसारे
ऐसे हैं मोहक सपन हमारे
बन–बनकर मिटते हैं जैसे
भीत रेत के, सरित किनारे। □

क्या मुझे पहचान लोगे

मिल गए उस जन्म में
क्या मुझे पहचान लोगे
मेरी रूह के अंश हो तुम
क्या क्षण में ही जान लोगे।

चौंककर मृगिनी–सा पग धर
दौड़ पड़ोगे पुलकित होकर
खुली लट होगी, चूमती मुख
क्या अंक भरोगे ललककर
इस जन्म के लोक–लाज को
मृदु हित मेरे बलिदान दोगे
क्या मुझे पहचान लोगे।



युग–युग की प्यास का खयाल
पूछेंगे मेरा हालचाल
साँसें तेरी बनके प्रभंजन
बह जाएँगे सारे सवाल
भ्रम से उपजित अभिमानों को
छोड़ मुझे स्वीकार करोगे
क्या मुझे पहचान लोगे।

प्रणय नहीं मोहताज किसी का
सकल साँझ, ताज किसी का
युग का विरह बिताकर मैंने
सँभाला है एहसास किसी का
स्वयं समर्पित होकर तुम अब
नव निश्चल आख्यान रचोगे
मिल गए उस जन्म में
क्या मुझे पहचान लोगे।

□

कभी-कभी ऐसा भी हो...

कभी–कभी ऐसा भी हो
पूरी चाँद की रात हो
हलकी–हलकी बरसात हो
और तुम आ जाओ।

कभी–कभी ऐसा भी हो
नर्म–मुलायम वात हो
तुम्हारी खुशबू ज्ञात हो
और तुम आ जाओ।



कभी–कभी ऐसा भी हो
दिल्लगी हो, तन्हाई हो
मिलने को इठलाई हो
और तुम आ जाओ।

कभी–कभी ऐसा भी हो
बादल टूट के बरसा हो
पल–पल दिल तरसा हो
और तुम आ जाओ।

कभी–कभी ऐसा भी हो
सूनी झंझावात डगर हो
कोई न मेरे साथ मगर हो
और तुम आ जाओ।

कभी–कभी ऐसा भी हो
उफनता दरिया न थाह हो
रिसते जख्म टिसते आह हो
और तुम आ जाओ।
कभी–कभी ऐसा भी हो...

□

अगर तुम मिलने आ जाओ

मेरी जिंदगी सँवर जाए
अगर तुम मिलने आ जाओ
रुत फिजा की बदल जाए
अगर तुम मिलने आ जाओ।

तेरी हँसी ने बेदार कर दिया
जिंदगी ने बेजार कर दिया
बीते पल ने अवसाद भर दिया
यह कसक दिल से निकल जाए
अगर तुम मिलने आ जाओ।



सब पूछते हैं हमारा हाल अब
समझता हूँ दुनिया की चाल सब
दूरियाँ बढ़ाती अपनों का खयाल अब
सब मुझसे अब जल जाएँ
अगर तुम मिलने आ जाओ।

क्या करना मुझे जमाने से
क्या मिलना मुझे अफसाने से
मिलती नहीं जिंदगी बहाने से
महके–महके सपने भी पल जाएँ
अगर तुम मिलने आ जाओ।

बसा लो प्यार का एहसास
मान–अभिमान का हो जाए ह्रास
थाम हाथ, रच दो इतिहास
हारकर भी, जीत निखर जाए
अगर तुम मिलने आ जाओ
मेरी जिंदगी सँवर जाए
अगर तुम मिलने आ जाओ।

□

मन को कुछ आधार चाहिए

मुझको तुमसे नि:स्वार्थ प्यार है
पर मन को कुछ आधार चाहिए
इस स्वर को मधुर विस्तार दो
कल्पना को कामना का द्वार चाहिए।



मधुबन सा रूप मादक–सा चितवन
कनकाचल परिणय यौवन उपवन
दृग अनाहत के सम्मान में रत
बंकिम नयन का उपहार चाहिए
मुझको तुमसे निःस्वार्थ प्यार है
पर मन को कुछ आधार चाहिए।

शमन के प्रहरण, तनु तन
अगोचर सिद्ध नहीं, प्रयोजन
विज्ञान के शतपथ चराचर
उर से उर का व्यापार चाहिए।
मुझको तुमसे निःस्वार्थ प्यार है
पर मन को कुछ आधार चाहिए।

रणमद रुक जाती वाणी मेरी
वरद दिखती है नादानी मेरी
सहज संयत निखिल अकातर
वेदना का विस्तार चाहिए
मुझको तुमसे निःस्वार्थ प्यार है
पर मन को कुछ आधार चाहिए।

☐

उस रात नहीं मैं रोया

उस रात नहीं मैं रोया
जब बालक–सा व्याकुल
तेरी गोद में छिपकर सोया
उस रात नहीं मैं रोया।

जीवन के दुःख सारे भूल
हर्षित मन, बरसाए फूल
विस्मृत करके सारे हार
नोन जैसे जल में खोया
उस रात नहीं मैं रोया।



पथ कंटकित, नहीं याद किया
स्वर्ग भी नहीं, फरियाद किया
गतिमान बन किरणों जैसे
भार दर्द नहीं, मैं ढोया
उस रात नहीं मैं रोया।

स्वर्णिम–सी, धीर छाया
छोड़ जगत् के मोह–माया
प्यासी धरा पर सोम बन
हर्षित, वर्षित मैं जोया
उस रात नहीं मैं रोया।

जीवन बगिया अब महका
ज्वार कोई उर में दहका
नव जीवन–सा ले आकार
मधुमय बीज, बता, बोया
उस रात नहीं मैं रोया।

□

मेरे मन को

सोई सुधियों को छूकर तुमने
मेरे मन को विकल बनाया
पास–पास रहकर साँसों के
मेरी आस को सफल बनाया।
सुख रँगे तुमने और दुःख भी
चित्र बनी मेरे जीवन की
संवेदना की परत उकेरकर
जलधारा–सा वलय बनाया
सोई सुधियों को छूकर तुमने
मेरे मन को विकल बनाया।



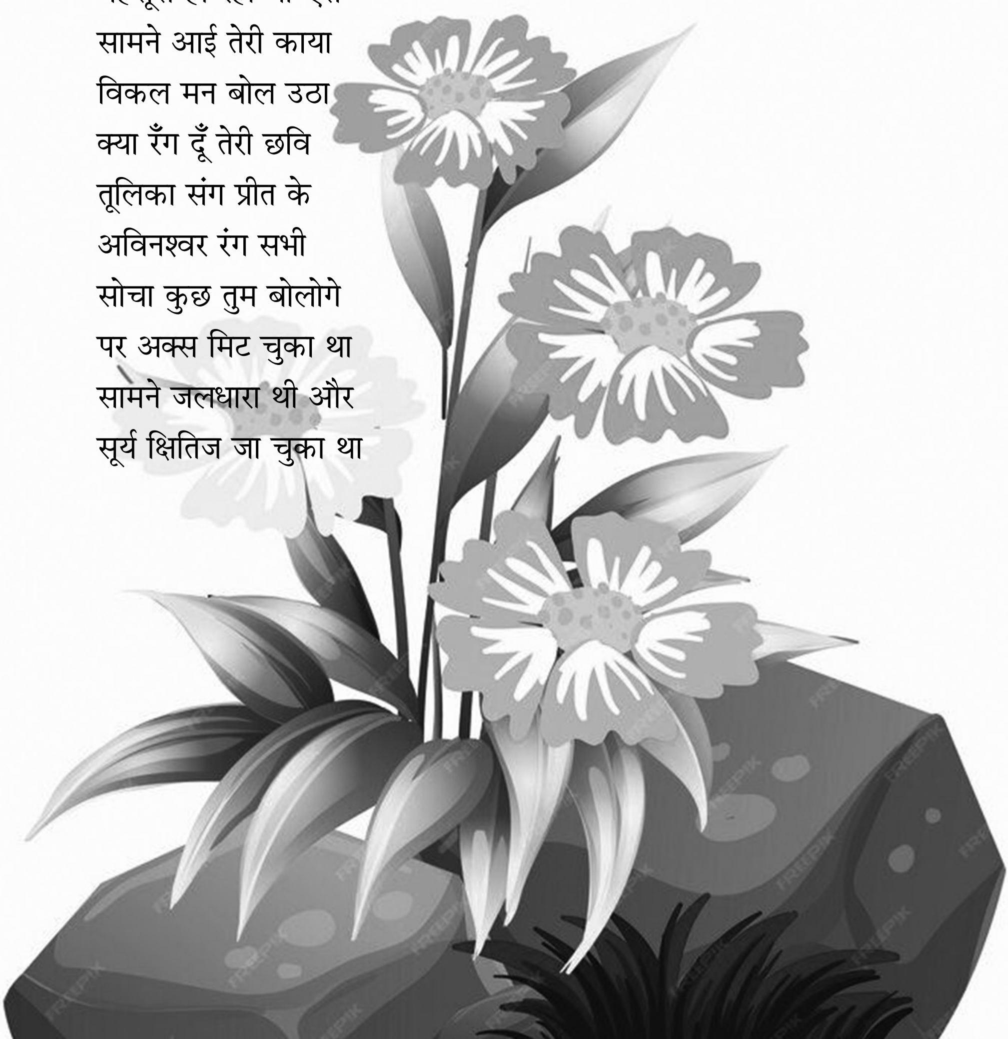
कुछ सूखा सा बेजान था मैं
अनुभूति से अनजान था मैं
आतप नेत्र नीर से मिलकर
मेरे भावों को सजल बनाया
सोई सुधियों को छूकर तुमने
मेरे मन को विकल बनाया।

मरुभूमि–सी मेरी जीवन राह
नहीं कोई किसी दिशा की थाह
उर मधुर परस से तपकर
अराल पथ को विजित बनाया
सोई सुधियों को छूकर तुमने
मेरे मन को विकल बनाया।

□

संघर्ष

बैठा झील किनारे
देख रहा था अपनी छाया
महसूस हो रहा था ऐसे
सामने आई तेरी काया
विकल मन बोल उठा
क्या रँग दूँ तेरी छवि
तूलिका संग प्रीत के
अविनश्वर रंग सभी
सोचा कुछ तुम बोलोगे
पर अक्स मिट चुका था
सामने जलधारा थी और
सूर्य क्षितिज जा चुका था



एक सुरभित झोंका आया
बोला, सब मन की माया
समय धारा अपनी नहीं हो पाती
ऐसी तसवीर रँगी नहीं जाती
उज्ज्वल छवि भूले से बनती
निरामय, क्षण में मिट जाती
पर देखा जेठ मास की गरमी
जब बदन झुलसने लगता है
तब अमलतास खिलखिलाता है
क्योंकि, संघर्ष का अर्थ जानता है।

□

बारिश का नमकीन पानी

बारिश में भीगी, मुसकराती हुई तुम
कँपकँपाती आवाज, लहराती हुई तुम
बोली मैं अच्छी हूँ, कैसी है तेरी रवानी
छुपके रोई थी, नमकीन बारिश का पानी।

नमकीन पानी है या अमृत की बूँद
निकली जो तृषित मन से नयन मूँद
अराल पथ बनेगा एक दिन राह कल्याणी
खिलेंगे फूल, चाहे धरा हो पाषाणी।

जब तक हृदय में स्पंदन, भय है
उरोरूह राग है, जीवन की लय है
मिलन–विरह चितवन चिर कहानी
नवजीवन का उद्‌भव है रव पानी।

□□□

